ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 14 अंकः 161 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अक्टूबर 2021

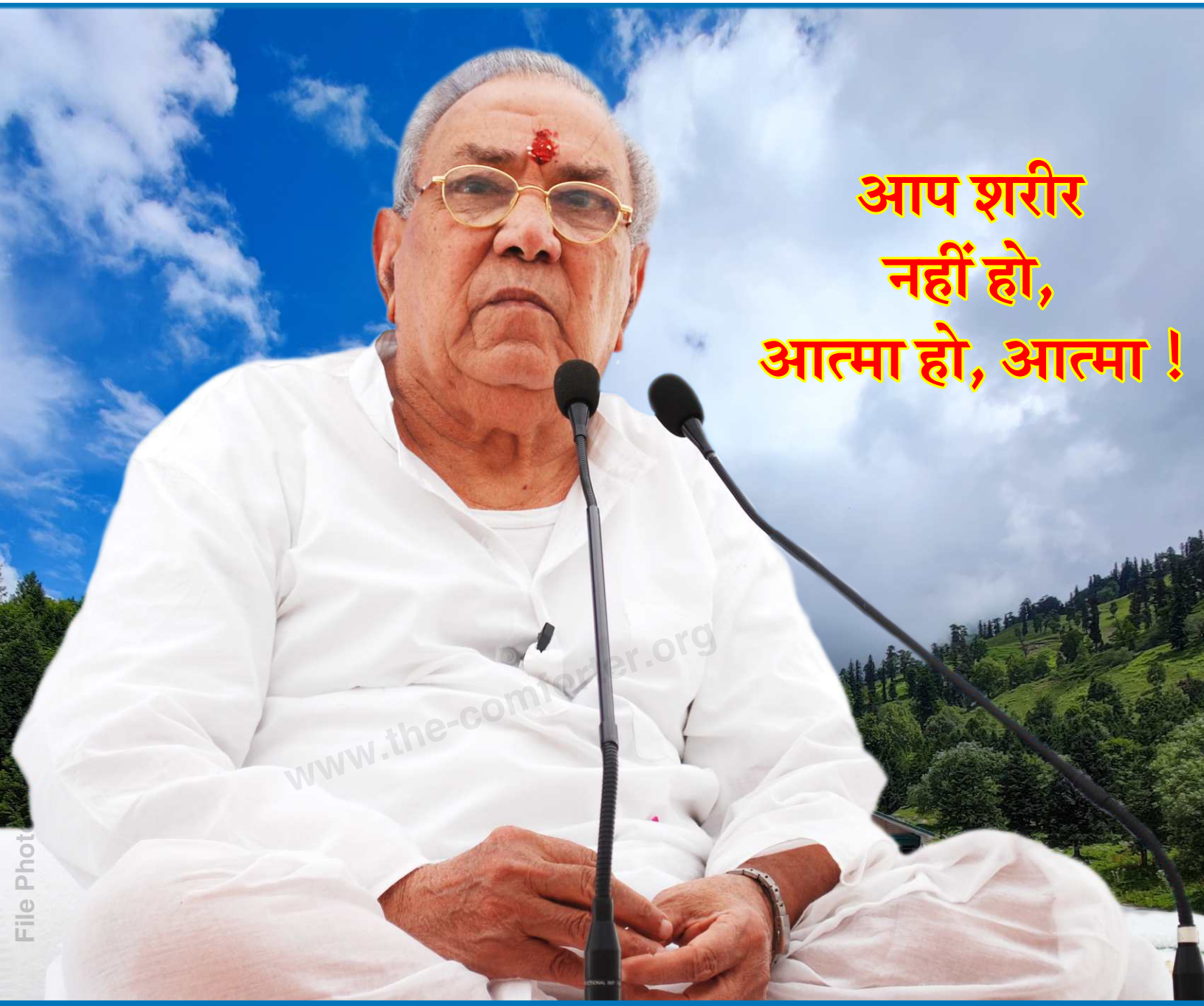

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

भागवत शक्ति का अवतरण

महर्षि श्री अरविन्द को भगवान् श्रीकृष्ण ने वरदान दिया था- ''शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व-लोक से एक भागवत शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित मृत्यु और असत्य के राज्य को समाप्त कर यहाँ भी भगवान् के राज्य की स्थापना करेगी।''

और वह परमसत्ता श्री अरविन्द को दिये वरदान के अनुसार भारत की पुण्य भूमि पर मानव शरीर धारण करके अवतरित हो गई। इस अवतरण के बारे में श्री अरविन्द ने घोषणा करते हुए कहा है-

''24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनंद के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनंदमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनंद की तरफ उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।''

(समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के कर कमलों द्वारा लिखित)

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 161 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अक्टूबर 2021

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

भागवत शक्ति का अवतरण 2
मोक्ष क्या है, उसको प्राप्त करना क्यों जरूरी है ? 4
अवतार का मानवीय पक्ष 12
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 13
सिद्धयोग ध्यान शिविर 18
साधना विषयक बातें 23
अवतार भी मानवीय दुःख को झेलते हैं 29
कहानी- सच्ची प्रार्थना स्वीकृत हुई 30
साधकों के अनुभव 32
जीवन में ध्यान का महत्त्व 34
चेतना 35
सिद्ध-योगियों की महिमा 40
आंतरिक चेतना के विकास द्वारा समस्याओं का समाधान 44
रूपान्तरण 45
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 50
योग के आधार 52
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 56
ध्यान की विधि 59

मोक्ष क्या है, उसको प्राप्त करना क्यों जरूरी है ?

हम देख रहे हैं कि संसार की हर वस्तु नाशवान है। हमारे सभी संत कह गये हैं- वह अजर अमर है। उसकी प्राप्ति के बिना परमशान्ति असम्भव है। केवल ईश्वर प्राप्ति से ही परमशान्ति और परमानन्द की प्राप्ति सम्भव है, इसके बिना जीव के बन्धन कटने का कोई उपाय नहीं है। हमारे सभी संत कह गये हैं, मनुष्य जीवन ही मात्र मोक्ष प्राप्त करने का समय है। अगर जीवन कर्मों की गहन गति के कारण, मनुष्य जन्म पाकर भी अपने उस सही गन्तव्य की तरफ यात्रा प्रारम्भ नहीं करता है तो इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात कोई और हो ही नहीं सकती। इस संसार के बारे में संतों ने स्पष्ट कहा है कि यह मात्र ईश्वर का ही विश्व स्वरूप है।

मनुष्य योनि, ईश्वर की उच्चत्तम स्थिति का ही नाम है। इसीलिए हमें संतों ने स्पष्ट कहा है कि पूर्ण ब्रह्माण्ड सहित सभी लोक, मनुष्य शरीर के अन्दर हैं। मनुष्य शरीर ही असली मन्दिर है, जिसमें प्रवेश करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है। उस परम सत्ता तक पहुँचने का यही एक मात्र रास्ता है। इसके बिना उस परम सत्ता से जुड़ने का कोई उपाय नहीं है। इस समय संसार में जितनी भी आराधनाएँ प्रचलित हैं, प्रायः सभी का तरीका बहिर्मुखी है। कुछ चन्द अन्तर्मुखी होने की बात बताते हैं, परन्तु वह सब माया के क्षेत्र में प्रवेश करने मात्र का उपाय है। कुछ लोग स्वास की क्रिया विशेष के द्वारा उस परम सत्ता से जुड़ने की बात तो करते हैं, परन्तु किसी को भी उसका पूर्ण ज्ञान नहीं है। यह आराधना इस युग की न होने के कारण, अब होनी असम्भव है। पातंजलि आदि हमारे कई ऋषियों ने इसके लिए यम, नियम, खान-पान तथा रहन सहन के जो सिद्धान्त बताये हैं, उनका पालन इस युग में तो पूर्ण रूप से असम्भव है।

अगर करोड़ों में एक मनुष्य कुछ आंशिक सफलता भी पा लेता है तो उससे क्या लाभ ? इस क्षेत्र की कमाई मात्र उसी के काम आती है, जो कमाता है। इसके

www.the-comforter.org

अलावा ईश्वर ने स्त्रियों की प्रकृति ही ऐसी बनाई है कि उनके लिए तो यह आराधना संभव ही नहीं है। क्या स्त्रियों को मोक्ष का अधिकार नहीं है? ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार स्त्री-पुरुष दोनों को इस संसार में जीवन यापन करते हुए मोक्ष प्राप्ति का एक बराबर अधिकार है। इस प्रकार पिछले युगों की आराधनाएँ, इस युग में सम्भव नहीं हैं।

काल चक्र अबाध गति से चलता रहता है। अतः संसार की हर वस्तु में परिवर्तन अवश्यंभावी है। इसे रोकने की किसी में भी क्षमता नहीं है। हम देख रहे हैं, भौतिक जगत् में विज्ञान ने कितनी तरक्की कर ली है। यह बात यथार्थ और सही है। परन्तु अभी तक आध्यात्मिक जगत् में, इस सम्बन्ध में बिलकुल चेतना नहीं आई है।

एक निर्जीव पदार्थ की तरह यह जगत् पूर्ण रूप में अचेतन अवस्था में पड़ा है। विज्ञान के सभी सिद्धान्त प्रयोगशालाओं में कई बार सही प्रमाणित होने के बाद लिपिबद्ध किये जाते हैं। फिर भी उन पुस्तकों को पढ़ कर कोई भी विद्यार्थी, डॉक्टर या इंजिनीयर नहीं बन सकता, जब तक वह उन सिद्धान्तों को प्रयोगशाला में स्वयं सिद्ध करके नहीं देख लेता। इस प्रकार विज्ञान के विद्यार्थियों को अगर प्रयोगशाला का मुँह ही नहीं देखने दिया जाय और केवल इस ज्ञान की पुस्तकें पढ़ाकर डॉक्टर और इंजिनियर बनाने के प्रयास किये जायें तो पूर्ण रूप से असफलता ही हाथ लगेगी। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर प्रयोगशालाएँ प्रगति करती रही हैं और नई-नई खोज, शोध कार्यों द्वारा होती गई और नई खोज के सिद्धान्तों को लिपिबद्ध किया जाता रहा।

यही कारण है कि भौतिक विज्ञान

www.the-comforter.org

आज अपनी चरम सीमा तक पहुँचने वाला है। इसके ठीक विपरीत अध्यात्म विज्ञान की प्रायः सारी की सारी प्रयोगशालाएँ, समय और कालचक्र के साथ समन्वय नहीं रख पाने के कारण पूर्ण रूप से नष्ट हो गईं। इस समय संसार के सभी धर्माचार्यों के पास पुराने आध्यात्मिक विज्ञान के वैज्ञानिकों की पुस्तकें मात्र बची हुई हैं। प्रयोगशालाओं के अभाव में ये सभी ग्रन्थ निरर्थक हैं।

केवल सैद्धान्तिक ग्रन्थ इस ज्ञान को सजीव बनाकर मानव का कल्याण करने में समर्थ हो ही नहीं सकते। अतः जब तक प्रयोगों के द्वारा शोध करके इस विज्ञान को बढ़ावा नहीं दिया जायेगा, तब तक तोते की तरह ग्रन्थों को रटने से कुछ भी लाभ नहीं होगा। क्योंकि सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का खजाना, मनुष्य शरीर के अन्दर ही छिपा है। आज तक की भौतिक विज्ञान की उन्नति का कारण मनुष्य के अन्तर की प्रेरणा और चेष्टाओं का ही फल है। अतः अध्यात्म विज्ञान की खोज भी मनुष्य को अन्तर्मुखी हो कर ही करनी पड़ेगी। भौतिक विज्ञान तो मनुष्य को भौतिक सुख ही प्रदान कर सकता है। ये सुख अस्थाई और क्षणिक होते हैं। इनसे स्थाई सुख शान्ति सम्भव नहीं है। अतः जब तक भौतिक विज्ञान के बराबर अध्यात्म विज्ञान उन्नति नहीं कर लेता, तब तक महर्षि अरविन्द की, ''धरा पर स्वर्ग उतर आने''की भविष्यवाणी सत्य नहीं हो सकेगी।

भौतिक विज्ञान बहिर्मुखी चेतना का परिणाम है, इसके ठीक विपरीत आध्यात्मिक शक्तियों का साक्षात्कार अन्तर्मुखी आराधना के द्वारा ही सम्भव हैं। भौतिक विज्ञान इन्हीं आध्यात्मिक शक्तियों की देन है। अतः जब तक यह शक्ति अपनी पैदा की हुई वैज्ञानिक शक्ति को सीधा अपने अधीन करके इसका संचालन करना प्रारम्भ नहीं करती है तब तक, श्री अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य नहीं होगी। भौतिक विज्ञान की इस विनाश लीला पर तो अंकुश लगाने में सिर्फ आध्यात्मिक शक्ति ही सक्षम है, और सभी उपाय पूर्ण रूप से निरर्थक हैं। मानव

www.the-comforter.org

अपनी बुद्धि के कौशल से इस विनाश लीला को रोक पाने में असमर्थ है। इस युग के धर्मगुरु जो कृत्रिम शान्ति मिशन चला रहे हैं, उससे कुछ भी असर होने वाला नहीं है। भौतिक विज्ञान एक सच्चाई है। यह किसी झूठ का आदेश कभी नहीं मानेगा। जब तक इसका जन्म दाता स्वयं प्रकट हो कर प्रमाण सहित इस शक्ति को सन्तुष्ट नहीं करेगा, यह किसी का आदेश नहीं मानेगी।

अतः जब तक संसार का मानव अन्तर्मुखी होकर उस परमसत्ता के धाम को जाने वाले रास्ते से चलकर उसका साक्षात्कार नहीं कर ले, शान्ति सम्भव नहीं। इस प्रकार ज्यों ही संसार का मानव उस परम सत्ता से जुड़ा कि ये भौतिक शक्तियाँ, मानव के सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो जाएंगीं, और चेरी बनकर प्राणी मात्र की सेवा में लग जाएंगीं। भारत जगत् हृदय का रखवाला है। अतः इस भूभाग पर पैदा होने वाले मनुष्य के माध्यम से ही वह परम शक्ति अपनी सत्ता का बोध सारे संसार को कराकर शान्ति स्थापित करेगी।

हमारे संतों ने उसके ध्येय तक पहुँचने के रास्ते का स्पष्ट वर्णन किया है। संन्यास मार्ग और भक्ति मार्ग द्वारा पहुँचना सम्भव है। गीता में स्पष्ट लिखा है, संन्यास मार्ग का रास्ता बहुत कठिन है, परन्तु निष्काम कर्म योग के सिद्धान्त पर चल कर भक्ति करता हुआ, प्रेम मार्गी जीव निश्चित रूप से निर्विघ्न उस पर परमसत्ता से जुड़ जाता है।

हमारे शरीर में छह चक्रों का वर्णन आता है। योगी मूलाधार से चलना प्रारम्भ करता है। इस प्रकार छठा चक्र भेदने पर वह माया के क्षेत्र को पार कर सकता है। इस चक्र को आज्ञाचक्र भी कहते हैं। क्योंकि नीचे के माया के जगत् की सारी शक्तियाँ आज्ञाचक्र के ऊपर की शक्ति के आदेश से कार्य करती हैं, इसीलिए इसे आज्ञाचक्र कहा गया है। छठे चक्र तक की सभी मायावी शक्तियाँ इतनी प्रबल हैं कि कोई भी अपनी सीमा से बाहर, जीव को निकलने ही नहीं देती।

अतः इस मार्ग से पहुँचना, इस युग में कठिन ही नहीं, असम्भव सा लगता है।

www.the-comforter.org

परन्तु निष्काम कर्म योग के सिद्धान्त पर चलकर जीव प्रेम पूर्वक ईश्वर भक्ति करता हुआ निर्विघ्न आसानी से अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है। अतः गीता में इसी मार्ग को श्रेष्ठ बताते हुए, इसी पर चलने का निर्देश दिया गया है। इस युग के धर्म गुरुओं ने ज्ञान के अभाव में, इस पथ पर चलने की व्याख्या करते हुए, ऐसी उलझनें पैदा कर दीं कि प्राणी, विभिन्न भ्रान्तियों में उलझ कर रह जाता है। पाप, पुण्य, दान, त्याग, तपस्या, धर्म आदि की ऐसी गलत व्याख्याएँ कर डालीं कि जीव भ्रमजाल में फँस कर रह जाता है।

कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, शब्द जाल, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास के सहारे अध्यात्म का ऐसा रूप दिखाया जाता है कि सही रास्ता उसे दिखाई ही नहीं देता। यही कारण है कि इतना आसान काम ही असम्भव बन गया और इस प्रकार लोगों का धर्म पर से विश्वास ही खत्म हो गया। परिणाम के अभाव में हर कार्य की यही स्थिति होती है। निरर्थक कार्य कोई क्यों करेगा? अतः आज संसार में धर्म के प्रति लोगों की आस्था समाप्त होने का दोष, इस युग के धर्म गुरुओं पर है। धर्म को उन्होंने पेट से जोड़ लिया।

इस प्रकार धर्म की आड़ में जब शोषण, अन्याय और अत्याचार अपनी सीमा लांघ गया तो लोगों ने विद्रोह कर दिया। धर्म की इस हालत को देख कर भंयकर दुःख होता है। इतना होने पर भी धर्म गुरुओं को दया नहीं आ रही है। आज भी नये नये हथकण्डे अपना कर लूट में लगे हुए हैं। अगर सच्चा आध्यात्मिक गुरु मिल जाय तो क्षण भर में अन्धकार भग जाता है।

सच्चे गुरु की व्याख्या, मैं पहले कर ही चुका हूँ। क्योंकि संत सत्गुरु की माया, अतीत सत्ता से सीधा सम्पर्क रखती है, इसलिए संसार की माया उनके सामने चेरी बनकर, हाथ जोड़े खड़ी रहती है। इस प्रकार ऐसे गुरु से जुड़ने वाला जीव अनायास ही माया के प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

www.the-comforter.org

इस प्रकार गुरु कृपा से वह सीधा आज्ञाचक्र भेद कर, अपनी यात्रा प्रारम्भ करता है। क्योंकि गुरु कृपा से अनायास ही जीव माया के चक्र से मुक्त होकर, उस परमसत्ता की आकर्षण सीमा में प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार आगे के मार्ग में केवल सहयोगी शक्तियों ही उसे मिलती रहती हैं। इस प्रकार ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है, आकर्षण बढ़ता जाता है और चलने की गति तेज होती जाती है। इन आध्यात्मिक लोकों में समय की दूरी जीव को प्रभावित नहीं कर सकती। अतः उस परम सत्ता से जुड़ने में उसे कोई देर नहीं लगती। विघ्न बाधाएँ तो आज्ञाचक्र तक ही होती हैं।

इस प्रकार संत सत्गुरु से जुड़ते ही वे सभी अनायास ही समाप्त हो जाती हैं। इस प्रकार जीव उस परमसत्ता से जुड़ कर जन्म मरण के चक्कर से छुटकारा पा जाता है।

आज्ञा चक्र से ऊपर मोटे तौर पर तीन लोक हैं। सत् लोक, अलख लोक और अगम लोक। अगम लोक में पहुँच कर जीव उस परमसत्ता में लीन हो जाता है। यहाँ परमानन्द और चिरस्थाई त्रिगुणमयी माया द्वारा रचा गया, जगत् ही दिखाई देता है। क्योंकि संसार के जीव इस माया द्वारा संचालित है, अतः उसे भी देखने में सक्षम नहीं हैं, केवल अन्तर दृष्टि ही उन्हें देखने में सक्ष्म हैं। ज्यों-ज्यों जीव ऊपर चढ़ता जाता है, नीचे के लोक और उसकी शक्तियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं।

मनुष्य का शरीर तीन भागों में विभक्त है- स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, और कारण शरीर। कारण शरीर में इस जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक का पूरा हिसाब होता है। मनुष्य अपने जीवन की आगे होने वाली घटना का ज्ञान, इस शरीर में प्रवेश करने पर टेलीविजन के दृश्य की तरह जान जाता है।

ये तीनों शरीर त्रिगुणमयी माया की हद में हैं। उनके अन्दर होती है आत्मा। परमात्मा, करोड़ों सूर्य से भी तेज शक्ति का पुँज है। उसकी एक किरण का नाम आत्मा है। क्योंकि यह उस पूर्ण सत्ता का ही अंश है अतः आत्मा और परमात्मा में

www.the-comforter.org

कोई भेद नहीं होता। इससे जीव का जब साक्षात्कार हो जाता है तो इसी धार के सहारे जीव उसके उद्गम स्थान यानी परमात्मा तक पहुँच जाता है। माया के क्षेत्र में इससे साक्षात्कार सम्भव नहीं है।

अतः आज्ञा चक्र का भेदन किये बिना यह कार्य असम्भव है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर तथा आत्मा और परमात्मा इस प्रकार से लिप्त हैं कि इनको अलग-अलग करके देखना असम्भव है। उदाहरण के तौर पर एक गन्ने के ऊपर अन्दर दो हिस्से होते हैं। अन्दर के भाग में रस छिपा रहता है। देखने से केवल ऊपर का सख्त भाग ही दिखाई देता है। इस प्रकार दबाने से उसमें से रस निकलता है। रस को देख कर हम उसका स्वाद नहीं जान सकते। वह तो चखने पर ही मालूम होता है कि वह मीठा है। उस रस में जो मीठापन है उसको पैदा करने वाली सत्ता ही ईश्वर है। इस प्रकार रस तक के तीन रूप शरीर के रूपों की तरह हैं। इस के अन्दर जो मीठापन है वह आत्मा और जिस सत्ता के कारण यह मीठापन पैदा हुआ वह परमात्मा है। गन्ने को देखने से हमें उसमें निहित इन सभी वस्तुओं का ज्ञान नहीं हो सकता। यह उदाहरण मात्र मोटे तौर पर समझाने का प्रयास मात्र है। असलियत तो प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। उसका ज्ञान तो आध्यात्मिक ज्ञान की प्रयोगशाला में परीक्षण करने पर ही प्राप्त हो सकता है।

जब संसार में धर्म का लोप हो जाता है और अधर्म का बोला बाला हो कर तमस ठोस बन कर संसार में जम जाता है, उस समय जिस जीव के माध्यम से परमसत्ता अपना सात्त्विक प्रकाश फैलाती है, वही सच्चा गुरु होता है। एक ही सच्चा संत सत्गुरु सम्पूर्ण संसार का अन्धकार भगाने में सक्षम होता है। इससे समझा जा सकता है कि गुरु क्या होता है? इसीलिए हिन्दू धर्म के सभी ग्रन्थों में गुरु की महिमा को वर्णन से परे बताया है।

भौतिक सुख क्षणिक और भरमाने वाले माया के खेल हैं। बचपन में जिससे

www.the-comforter.org

सुख महसूस होता है- तरुण अवस्था आते ही सुख के कारण और हो जाते हैं और ज्यों ही जवानी आती है और ही चीजों से सुख की अनुभूति होती है। बुढ़ापे में स्थिति फिर बदल जाती है। अन्त काल में जीव को भारी पश्चाताप होता है कि मैंने इन झूठे सुखों के चक्कर में मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया। श्री राजगोपालाचार्य ने अपने अन्तिम समय में इन सुखों की जो व्याख्या की है वह पूर्ण साफ है। सच्चा सुख चिर स्थाई एक जैसा ही रहता है। वह सुख केवल परमसत्ता से जुड़ने पर ही मिल सकता है। अतः मनुष्य को सच्चाई की खोज में प्रयत्नशील रहना चाहिए। परमात्मा हर समय, झुककर उसका हाथ थामने को तैयार रहता है। ऐसी स्थिति में पहुँचने पर थोड़े से प्रयास से ही भवसागर को पार करके, उस परम सत्ता में लीन हुआ जा सकता है। इस प्रकार मिलने वाला परमसुख और परमशान्ति चिर स्थाई होती है। एक बार मिल जाय तो अनन्तकाल तक जीव ऐसी स्थिति में रहता है और जन्म मरण के चक्कर से छूट जाता है। ऐसी स्थिति का ही नाम मोक्ष है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

अवतार का मानवीय पक्ष

www.the-comforter.org

''यदि अवतार का जीवन असाधारण आतिशबाजी का खेल हो तो इससे भी काम नहीं चलेगा। अवतार ऐंद्रजालिक जादूगर बनकर नहीं आते, प्रत्युत मनुष्य जाति के भागवत नेता और भागवत मनुष्य के एक दृष्टांत बनकर आते हैं।

मनुष्योचित शोक और भौतिक दुःख भी उन्हें झेलने पड़ते हैं और उनसे काम लेना पड़ता है ताकि वे यह दिखला सकें कि किस प्रकार इस शोक और दुःख को आत्मोद्धार का साधन बनाया जा सकता है।''

संदर्भः- श्री अरविन्द 'गीता प्रबन्ध' पुस्तक

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म'' में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आतताईयों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

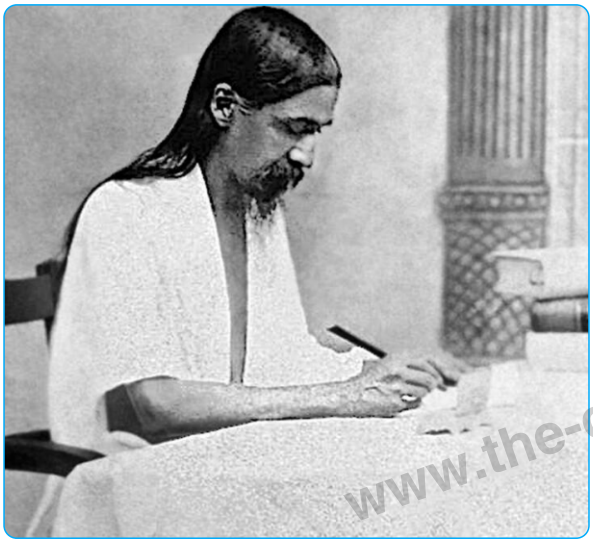

''मैं उनके लिए नहीं लिखता जो रूढ़िवादी हैं, न उनके लिए जिन्होंने एक नई रूढ़िवादिता, समाज अथवा पंथ खोज निकाला है, न ही उनके लिए जो नास्तिक हैं। मैं उनके लिए लिखता हूँ जो तर्क को स्वीकार करते हैं, कितु तर्क का संबंध पाश्चात्य भौतिकवाद से स्थापित नहीं करते; जो शंकालु हैं पर नास्तिक नहीं; जो आधुनिक विचारधारा के दावों को स्वीकार करते हुए भी भारत में, उसके मिशन में, उसके आध्यात्मिक सिद्धांत में, उसके शाश्वत जीवन में और उसके सतत पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं।''

www.the-comforter.org

श्री अरविन्द (सी. 1911)

(इंग्लैंड में तेरह वर्ष के प्रवास के पश्चात्, जहाँ उन्होंने पूरी तरह पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की, श्री अरविन्द 6 फरवरी, 1893 को, जब वे बीस वर्ष के थे, भारत लौटे। इससे ग्यारह वर्ष पहले बंकिमचन्द्र चटर्जी का आनंदमठ, जिसमें मातृभूमि की स्तुति ''वन्दे मातरम्'' सम्मिलित थी, प्रकाशित हो चुका था। स्वामी

विवेकानन्द ने भारत परिभ्रमण की अपनी पहली तीर्थयात्रा का अंतिम चरण तभी पूरा किया ही था और अमेरिका की जलयात्रा की तैयारी कर रहे थे। किन्तु देशवासियों के प्रति दी गई उनकी पुकार राजनीति के क्षेत्र में अभिव्यक्ति पा सके, इसमें एक दर्जन वर्ष अभी लगने थे। फिलहाल तो आठ वर्ष पुरानी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को, जिसके सदस्य अधिकांशतः अंग्रेजियत में रचे-पचे समाज के उच्च वर्गों से लिये गये थे, अंग्रेजों की निष्पक्षता में, और भारत में अंग्रेजों के शासन को 'नियति के विधान' के रूप में मानने में पूरा विश्वास था, और वर्ष-प्रतिवर्ष ब्रिटिश सम्राट के प्रति वह अपनी अविचल निष्ठा की शपथ लेती जाती थी। वह केवल याचिकाएँ प्रस्तुत करके ही संतुष्ट रहती, जिन्हें औपनिवेशिक प्रशासक सरलता से अनदेखी कर जाते। 1905 में खुले तौर पर स्वाधीनता संग्राम के प्रारंभ होने में बारह वर्ष का एक और दौर गुजरना बाकी था, और 1918 में राजनीति के पटल पर महात्मा गांधी के प्रवेश के पहले पचीस वर्ष और बीतने शेष थे।

श्री अरविन्द ने बंबई के मराठी-अंग्रेजी दैनिक इंदु प्रकाश में जब 'न्यू लैंप्स फॉर ओल्ड' शीर्षक से नौ लेखों की एक माला लिखी तब वे इक्कीस वर्ष के थे। इन लेखों में, जिनका प्रकाशन समाचार-पत्र के संपादक पर दबाव डाल कर बंद करा दिया गया था, श्री अरविन्द ने वर्तमान स्थिति का जायजा लिया था और कांग्रेस की 'भिखमंगी नीति' की ब्यौरेवार और कड़ी आलोचना की थी। कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं :)

अगस्त 7, 1893

हम किसी भी संस्था को उठाकर अंधपूजक की कोटि में रखना गंवारा नहीं कर सकते। ऐसा करने का सीधा परिणाम होगा स्वयं अपने ही तंत्र का दास हो जाना।

अगस्त 21, 1893

हमारा वास्तविक शत्रु हमारे अपने

www.the-comforter.org

बाहर की कोई शक्ति नहीं है, बल्कि हमारी अपनी कुख्यात कमजोरियाँ, हमारी कायरता, हमारी स्वार्थपरता, हमारा मिथ्याचार, हमारी अंधी भावुकता है।

अगस्त 28, 1893

तब मैं कांग्रेस के संबंध में यह कहूँगा कि – उसके उद्देश्य भ्रांतिपूर्ण हैं कि जिस भावना से वह उन्हें पूरा करने के लिए अग्रसर होती है वह एकनिष्ठता की भावना नहीं है, और जिन तरीकों को उसने चुना है वे सही तरीके नहीं हैं, और जिन नेताओं पर वह विश्वास करती है वे नेता बनने योग्य सही किस्म के व्यक्ति नहीं हैं; – संक्षेप में यह कि इस समय हम नेतृत्व के लिए अंधों पर निर्भर हैं, पूरी तरह अंधों पर न सही तो भी कम से कम एक आँख के अंधों पर।

दिसंबर 4, 1893

हमारी महत्त्वाकांक्षा सस्ते खिलौनों से खेलने की है, गंभीरता की भावना के साथ पूरा जोर लगाकर महत्त्वपूर्ण प्रश्नों से निपटने की नहीं। किन्तु जब हम खिलौनों से खेल रहे हैं, अपने विधान परिषदों से, अपनी समकालिक परीक्षाओं से, प्रशासनिक कार्यों से न्यायिक कार्यों को अलग करने की अपनी विदग्ध योजनाओं से, खेल रहे हैं, – जब हम, मैं कहता हूँ, इन छोटी-छोटी बातों में अपनी चालाकी दिखा रहे हैं, तब महासागर की जलराशि में मंथन हो रहा है। और आदिम मानव की हिलोरें मारती हुई विशृंखलता, जिसके ऊपर हमारे सभ्य समाजों ने रूढ़ि की पतली परत अध्यारोपित कर रखी है, अब विचित्र और शकुनात्मक रूप से विलोड़ित हो रही है।

(भारत लौटने पर श्री अरविन्द बड़ौदा राज्य सेवा में भर्ती हो गये; 1897 से 1906 के प्रारंभ तक उन्होंने बड़ौदा कालेज में फ्रेंच और अंग्रेजी पढ़ाई और बाद में उसी कॉलेज के प्रिंसिपल बन गये। इन्हीं वर्षों मे उन्हें व्यक्तिगत रूप से यह अनुभव हुआ कि भारत में शिक्षा की दशा कितनी निराशाजनक है और उसने उन्हें एक

www.the-comforter.org

सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा की तीव्र आवश्यकता महसूस कराई।)

प्रारंभिक १९०० के वर्ष

यदि वह (भारतीय विश्व-विद्यालय व्यवस्था) जो शारीरिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है वह गर्हित है और नैतिक प्रशिक्षण शून्य के बराबर है तो जो मानसिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है वह भी परिमाण में तुच्छ और गुणवत्ता की दृष्टि से व्यर्थ है।... एक विद्यार्थी को अपनी डिग्री प्राप्त करने के लिए हमें यह नितांत अनिवार्य बना देना चाहिए कि उसे एक अच्छी शिक्षा प्राप्त करनी पड़ेगी। यदि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक व्यर्थ की शिक्षा ही पर्याप्त है और एक अच्छी शिक्षा बिल्कुल अनावश्यक है तो यह स्पष्ट है कि ऐसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए, जिसे विद्यार्थी अनावश्यक समझता है, वह अधिक कष्ट नहीं उठायेगा और न अपनी शक्तिको इस ओर मोड़ेगा। पर इस वस्तुस्थिति को बदल डालो, संस्कृति और वास्तविक विज्ञान को अनिवार्य बना दो, और वही रुचिगत प्रेरणा जो अभी उसे एक व्यर्थ की शिक्षा से संतुष्ट रखती है, तब उसे संस्कृति और वास्तविक विज्ञान हेतु प्रयास करने के लिए बाध्य कर देगी... हम भारत में इतने बर्बर हो गये हैं कि हम अपने बच्चों को बड़े ही उपयोगितावादी अभिप्राय से स्कूल भेजते हैं जिसमें तटस्थ रूप से भी ज्ञान के लिए कोई आकांक्षा का मिश्रण नहीं होता। किन्तु इसके लिए जो शिक्षा हमें मिलती है वह स्वयं ही उत्तरदायी है।

हमने इस देश में जो शिक्षा को ज्ञान के अर्जन के साथ गड्डमड्ड कर दिया है वह एक बुनियादी और खेदजनक भूल की है।... ज्ञान का परिमाण अपने आप में प्रथम महत्त्व की वस्तु नहीं है जितनी कि जो हम जानते हैं उसको अच्छे से अच्छे उपयोग में लाना। हमारे शिक्षाविदों की यह सीधी-सी धारणा, कि ज्ञान के प्रत्येक विभाग में मस्तिष्क को केवल हम कुछ सतही तथ्य ही उपलब्ध करा दें तो अपने आप को

www.the-comforter.org

विकसित करने और स्वयं अपने उपयुक्तमार्ग का अवलंबन करने का दायित्व हम मस्तिष्क पर छोड़ सकते हैं – विज्ञान के, मानवीय अनुभव के विपरीत है।... हालाँकि राष्ट्र के रूप में हमने बहुत कुछ खोया है, तो भी बौद्धिक जागरूकता, शीघ्रबोध और मौलिकता को हमने सदैव सुरक्षित रखा है। पर हमारी विश्वविद्यालय व्यवस्था से तो इस अंतिम देन को भी खतरा उत्पन्न हो गया है, और यदि यह चली गई तो ऐसे अधःपतन का प्रारंभ होगा जिससे हम उबर नहीं पायेंगे और अंत में मिट जायेंगे।

इसलिए सुधार के लिए सबसे पहला कदम यही होना चाहिए कि हम अपनी शिक्षा के संपूर्ण उद्देश्य और प्रणाली में क्रांति लायें।

भारतीय विद्वत्ता के पास... (यूरोपीय के ऊपर), स्पष्टतया एक लाभ होना चाहिए, भाषा की एक अंतरंग अनुभूति, एक संवेदनशीलता जिसे कि यूरोपीय प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी जातीय श्रेष्ठता की भावना त्याग नहीं देता... क्योंकि यूरोपीय के लिए संस्कृत के शब्द मृत विचारों से अधिक और कुछ नहीं हैं जिनके साथ वह जैसे चाहे खेल सकता है और अत्यंत अस्वाभाविक स्थानों अथवा अति विरूप संयोजनों में जिन्हें फेंक सकता है। हिंदू के लिए वे जीवंत वस्तुएँ हैं जिनकी प्रकृति की यथार्थ आत्मा को वह समझता है और जिनकी संभावनाओं को वह बाल जैसी सूक्ष्मता से आँक सकता है। इन लाभों के होते हुए भी भारतीय विद्वान अपने-आप को ज्ञान की एक महान् और स्वतंत्र शाखा के रूप में स्थापित नहीं कर सके, उसके दो कारण हैं, हमारे विश्वविद्यालयों में संस्कृत में दक्षता के लिए दयनीय अल्पता के साथ किया गया प्रावधान जो जन्मजात विद्वानों को छोड़कर बाकी सभी को अपंग बना देता है, और उनमें सुदृढ़ स्वाधीनता का अभाव जो हमें यूरोपीय प्राधिकार स्वीकार करने के लिए आवश्यकता से अधिक तत्पर बना देता है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अगस्त-सितम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

28 अगस्त, 2021 राजसमंद जिले में माही गांव में वृद्धा आश्रम में सिद्धयोग कार्यक्रम

05 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित श्री करणी नगर विकास समिति के वृद्धा आश्रम में सिद्धयोग कार्यक्रम

06 सितम्बर, 2021 शिक्षा उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग कोटा में सिद्धयोग कार्यक्रम

अगस्त-सितम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

07 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित प्रेरणा संस्थान के नशा मुक्ति केंद्र में सिद्धयोग कार्यक्रम।

09 सितम्बर, 2021 गुमानपुरा कोटा स्थित खंडेलवाल छात्रावास में सिद्धयोग कार्यक्रम।

10 सितम्बर, 2021 राजसमंद स्थित राजकीय नर्सिंग महिला छात्रावास में सिद्धयोग कार्यक्रम।

अगस्त-सितम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

10 सितम्बर, 2021 राजसमंद जिले के देवथड़ी में बाल सुधार गृह में सिद्धयोग कार्यक्रम।

11 सितम्बर, 2021 आरोग्य संस्थान उदयपुर में नशा मुक्ति और पुनर्वास केंद्र पर सिद्धयोग कार्यक्रम।

13 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय बाल सुधार गृह में सिद्धयोग कार्यक्रम।

अगस्त-सितम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

16 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित हाड़ौती एड्स समिति में एड्स पीड़ित बच्चों के लिए सिद्धयोग कार्यक्रम।

23 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय एएनएम सेंटर में सिद्धयोग कार्यक्रम।

23 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय बीएससी नर्सिंग कॉलेज सिद्धयोग कार्यक्रम।

अगस्त-सितम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

29 सितम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय जीएनएम सेंटर पर सिद्धयोग कार्यक्रम।

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

प्रश्नः- श्रीमां, बिना मसहरी के मजे से सो सकती हूँ, मुझे मच्छर नहीं काटते। जो अनावश्यक है उसका और व्यवहार नहीं करूंगी, अपनी मसहरी और दो छोटी-छोटी चीजें आपके चरणों में निवेदित करती हैं।

उत्तरः- ये क्यों दी हैं ? मां को जरूरत नहीं, तुम्हें है। गर्मियों में मच्छर उतने नहीं काटते किंतु बरसात के बाद दुबारा आयेंगे। श्रीमां ये सब वापस कर रही हैं, श्रीमां का दान समझकर ले लो। यदि मां को कुछ देना है तो अपने-आपको दो, श्रीमां सहर्ष स्वीकार कर लेंगी उसे।

अत्युत्तम। जो कुछ अशुद्ध-अपवित्र है वह शांत हो शक्ति की अग्नि में होम दो। ऊपर का सब कुछ आधार में उतर आने दो-अंतर में निम्न स्तर की किसी चीज के लिये जगह नहीं रह जायेगी।

प्रश्नः-क्यों इतना नीचे उतर गयी ? मन में आता है कि सब कुछ तुम्हारे श्रीचरणों में अर्पित कर दूं, जिससे तुम्हारे जगत् से उनका समूल ध्वंस हो

www.the-comforter.org

जाये। हे भगवान्, क्या वह कोरी कल्पना है?

उत्तर- यह कल्पना नहीं है। नीचे जाने का उद्देश्य ही यही है। नीचे जो कुछ है, उस सबका समर्पण करना, आलोकित और रूपांतरित करना।

प्रश्नः- बीच-बीच में सिर में न जाने कैसा-कैसा लगता है-किसी समय अवश और शांत होता है और किसी समय झन-झन करता है और वहाँ से जैसे कुछ ऊपर की ओर आरोहण करता है और किसी समय ऐसा लगता है मानों ऊपर से कुछ उतरकर खोल रहा है।

उत्तरः- जब उपर से शक्ति मस्तक में उतरती है तो कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है।

प्रश्नः- बहुत ऊपर एक तरंगहीन प्रशांत महासागर देखती हैं। वह सागर मानों अनंत के साथ मिल गया है और एक स्वर्ण-तरी को अपने वक्ष में छिपा धीरे-धीरे नीचे की ओर आ रहा है।

उत्तरः- ऊर्ध्व चेतना की धारा के अवरोहण का लक्षण।

प्रश्नः- ऊपर से सूर्य समान और नीले प्रकाश के समान दो प्रकाश वर्तुलाकार हो केवल हृदय में उतर रहे हैं।

उत्तरः- इसका अर्थ है कि सत्य का प्रकाश और ऊर्ध्व मन का प्रकाश पुनः नीचे आ रहे हैं।

प्रश्नः- अपने चारों ओर असंख्य छोटी-छोटी बाधाएँ देख रही हूँ। लगता है, क्योंकि मैं सब बाधाओं को खोज-खोजकर बाहर निकाल रही हूँ और दृढ़ता से संपूर्ण रूप से उन्हें विजित कर रही हूँ इसीलिये ये बाधाएँ इस तरह से दिखायी दे रही हैं। मेरी अनुभूति में कुछ तथ्य है क्या?

उत्तरः- तुम्हारी अनुभूति सच्ची है। बाधाओं से डरो मत-सब देख-जानकर हटाना होता है, इसीलिये दिखायी दे रही हैं।

शरीर-चेतना का बहिर्मन ही साधना की इस स्थिति में विशेष बाधा देता है, वह बड़ा ही जिद्दी होता है, छोड़ता नहीं-साधक को उससे भी ज्यादा जिद्दी

www.the-comforter.org

बनना होता है, धीर- स्थिर, शक्ति को भीतर पाने के लिये दृढ प्रतिज्ञ होना होता है। अंत में, कितना ही जिद्दी क्यों न हो, यह मन और जिद नहीं कर सकेगा, रास्ते पर आ ही जायेगा।

प्रश्नः- सुना, कोई मुझे कह रहा है, ''तुम्हारी भीतरी मानसिक, प्राणिक, शारीरिक जितनी सब कठिनाइयाँ हैं, उन्हें रूपांतरित कर अथवा दूर कर नूतन जन्म ले श्रीमां के पास जा सकोगी।'' श्रीमां, क्या यह ठीक है?

उत्तरः- ये सारी बातें ठीक है, सभी साधकों पर लागू होती हैं। फिर भी इन सब कठिनाइयों के बावजूद, परिवर्तन की लम्बी अवधि के बीच भी शक्ति सर्वदा समीप हैं, सहायता कर रही है, यह बात सदा याद रखने से शांत मन से निरापद हो पथ पर चलना आसान होता है।

प्रश्नः- मैं अनुभव कर रही हूँ कि मन-प्राण की चेतना अंतर्मुखी न हो बाहर की ओर भाग रही है।

उत्तरः- ऐसा सबके साथ होता है। साधना पथ पर बहुत आगे बढ़ जाने के बाद भीतर-बाहर एक हो जाते हैं, इसके बाद ऐसा नहीं होता।

प्रश्नः- बीच-बीच में जब करुणामयी शक्ति को अनुभव करती और पुकारती हूँ तो बहुत जोर से रोना आता है और उसके साथ-ही-साथ हृदय के गंभीरतम प्रदेश में एक मधुर शांतिपूर्ण एहसास होता है।

उत्तरः- इस प्रकार का कन्दन प्रायः ही चैत्य पुरुष से आता है-जो भावना उठती है इसके साथ वह चैत्य पुरुष की भावना ही होती है। स्थिर भाव से साधना करती चलो-समय पाकर कठिनाइयाँ सरक जायेंगी।

प्रश्नः- श्रीमां, मैं इस समय एक शुष्क मरुभूमि में पड़ी हूँ। लगता है मेरे भीतर तुम लोगों के लिये कुछ नहीं है। क्यों इतनी निम्नावस्था में गिर गयी हूँ?

उत्तरः- साधना में चेतना के उतार-चढ़ाव अनिवार्य हैं-जिस समय नीचे गिरो उस समय विचलित न होओ, धैर्यपूर्वक शक्ति की ज्योति को

www.the-comforter.org

उस शुष्क भाग में पुकार लाओ–यही है उचित मनोभाव और उत्कृष्ट उपाय।

प्रश्नः– श्रीमां, मेरी प्राण–जगत् की एक शक्ति की ऊपर की और एक शक्ति ने आकर तुम्हारे श्रीचरणों में बलि चढ़ा दी। कुछ समय बाद देखती हूँ कि इस बलि के रक्त में से एक कमल खिल रहा है।

उत्तरः– निम्न प्रकृति की एक शक्ति के नाश हो जाने पर प्राण के एक भाग में सत्य चेतना खुल गयी।

अब समझ में आता है कि तुम्हारी बीमारी स्नायविक है, क्योंकि ये सब संवेदन स्नायविक को छोड़ और कुछ नहीं हैं। यह वमन का सुझाव भगा दो–जब ऐसे सब संवेदन आयें तो शांत बनी रहो, श्रद्धा के साथ शक्ति को पुकारो। इन सुझावों का दबाव कम होते ही बीमारी झड़ जायेगी।

जब किसी कठिनाई को दूर करने का प्रयास हो रहा होता है तब वैसा ही होता है–एक दिन सबसे मुक्ति मिल जाती है, लगता है सब चले गये हैं, दूसरे दिन फिर वही बाधा दिखायी देती है। अध्यवसाय के साथ लगे रहने से बाधा दुर्बल हो जाती है, फिर नहीं आती, यदि आये भी तो उसमें दम नहीं होता।

प्रश्नः– श्रीमां, आजकल और चीजों की अपेक्षा मैं वाणी ही क्यों अधिक सुन रही हूँ और लिपि भी क्यों देख रही हूँ ?

उत्तरः– साधना की गति का वेग बढ़ते–बढ़ते यह सब होता है। फिर भी खूब सावधानी से लिपि और वाणी को देखना–सुनना होता है–क्योंकि वे सच्ची और उपकारी हो सकती हैं और झूठी और विपत्ति जनक भी।

प्रश्नः– जब मैं 'क', 'ख' इत्यादि के साथ बात करती हूँ तो शरीर में दुर्बलता लगती है, भीतर अशांति और बेचैनी–सी महसूस होती है, सिरदर्द हो जाता है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। किंतु 'द', 'स' इत्यादि के साथ बातचीत करते हुए कभी ऐसा नहीं लगता। क्यों ?

www.the-comforter.org

उत्तरः- जब मिलना जुलना और बातचीत होती है तब उस आदमी की स्पंदन तुम्हारे ऊपर आती है। आपस में ज्यादा मेल-मिलाप और बातचीत करने से ही ऐसा होता है, किंतु साधारण अवस्था में किसी को कुछ महसूस नहीं होता, सचेतन प्रभाव भी नहीं होता और लोगों को समझ में नहीं आता कि इसलिये ऐसा हुआ है। जब साधना करने पर चेतना सजग और संवेदनशील हो जाती है तब महसूस होने लगता है ऐसा फल भी मिलता है। जिनकी चेतना तुम्हारी चेतना के अनुकूल हो उनके साथ बात करने से कुछ नहीं होता, लेकिन जहाँ चेतना अनुकूल नहीं होती अथवा आदमी में दुर्भावनाएँ हो तो तुम्हारे ऊपर ऐसा प्रभाव हो सकता है।

यह है पुरानी प्राण-प्रकृति जो एक माँग का भाव लेकर उठती है, कहाँ, मैं जो चाहती हूँ वह तो मुझे मिलता नहीं। इसी भाव से ये सब कल्पनाएँ आती हैं कि श्रीमां मुझे दूर रखती हैं, मुझे नहीं चाहती इत्यादि। ये जब उठे तो उन्हें समझाना होता है, झाड़ फेंकना होता है, चैत्य यह सब नहीं चाहता। वह सिर्फ श्रीमां को चाहता है, जानता है कि मां को चाहने से, उन पर श्रद्धा-भक्ति रखने से, सब हो जाता है। हर समय गहराई में, चैत्य में रहना होता है।

प्रश्नः- मैं प्रायः हर समय अपने सामने एक सीधा रास्ता देखती हूँ। कोई जैसे अंदर से कहता है, ''सब कुछ दूर फेंककर, किसी भी तरफ ध्यान न दे सिर्फ शक्ति-शक्ति कहते हुए बढ़ती चलो-शक्ति विकास के उच्चतम शिखर तक ले चलेंगी।''

उत्तरः- यही सच्चा रास्ता है-इस रास्ते पर कठिनाइयाँ आयें तो क्षुब्ध मत होओ, शक्ति ही इन सबको सुधार लेंगी, मुझे भय या दुःख करने की जरूरत नहीं। ऐसा सोचकर ही सीधे पथ पर बढ़ती चलो।

क्या किया जा सकता है, 'स' की उम्र हो गयी है, स्वभाव को आसानी से नहीं बदला जा सकता। उसके साथ

www.the-comforter.org

धैर्यपूर्वक यथासंभव काम करना होगा। जिस दिन चैत्य वातावरण सर्वत्र स्थापित होगा उस दिन और ऐसा नहीं लगेगा।

जैसे भी हो ध्यान में, काम करते हुए या वैसे ही बैठे हुए चेतना और शक्तिको आधार में उतारना और उसे काम करने देना ही वास्तविक चीज है-वह जिस भी तरह से, जिस भी उपाय से क्यों न हो।

प्रश्नः- देखती हूँ कि यहाँ साधक-साधिकाओं में पारस्परिक हिंसा और परनिन्दा करने की आदत काफी फैली हुई है।

उत्तरः- तुम जो कह रही हो वह ठीक है-मनुष्य का मन प्रायः इन्हीं सब दोषों से भरा रहता है। साधक अभी भी इन सब क्षुद्रताओं को मन-प्राण से झाड़ फेंकना नहीं चाहता, इससे शक्ति के काम में अनेक विघ्न आते हैं। लेकिन तुम यह सब देखकर विचलित नहीं होना-अपने को इन सबसे...स्वतंत्र रखकर, सबके लिये मंगल कामनाएँ करते हुए शांत मन से अपनी साधना करती चलो।

यदि उससे भीतर की चेतना भटक नहीं जाती तो विशेष क्षति नहीं। जो भी करो, उसमें सचेतन रहते हुए शक्ति के साथ युक्त रहना चाहिये, यही असली चीज है।

तुमने मेरी बात को गलत समझा-मैंने लिखा था कि अहंकार दो तरह का है-एक है राजसिक अहंकार जो सोचता है मैं शक्तिशाली हूँ, मेरे द्वारा ही सब होता है-और एक है इससे ठीक उल्टा-तामसिक अहंकार जो सोचता है, मैं सबसे खराब हूँ इत्यादि जैसे तुम बार-बार बोलती हो, ''आश्रम में मेरे जैसा खराब और कोई नहीं है।'' और इसके ऊपर यदि कहो. ''मेरे कारण से सब बन्द हुआ है, मेरी ही कठिनाई से आश्रम की यह अवस्था हुई है।'' तब यह शेषोक्त तामसिक अहंकार के सिवा और क्या हो सकता है?

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अवतार भी मानवीय दुःख को झेलते हैं

यदि कोई बुद्धिवादी ईसा के आगे चिल्लाया होता- तुम यदि ईश्वर के बेटे हो तो उतर आओ इस सूली पर से अथवा अपना पाण्डित्य दिखाकर कहता कि अवतार ईश्वर नहीं थे, क्योंकि वे मरे और यह भी बीमारी से कुत्ते की मौत मरे-तो वह बेचारा जानता ही नहीं कि वह क्या बक रहा है, क्योंकि वह तो विषय की वास्तविकता से ही वंचित है। भागवत आनन्द के अवतार से पहले शोक और दुःख को झेलने वाले अवतार की भी आवश्यकता होती है।

www.the-comforter.org

मनुष्य की सीमा को अपनाने की आवश्यकता होती है, ताकि यह दिखाया जा सके कि इसे किस प्रकार पार किया जा सकता है। और, यह सीमा किस प्रकार या कितनी दूर तक पार की जायेगी, केवल आंतरिक रूप से पार की जायेगी या बाह्य रूप से भी, यह बात मानव-जाति के उत्कर्ष की अवस्था पर निर्भर है, यह सीमा किसी अमानव चमत्कार के द्वारा नहीं लांघी जायेगी।''

संदर्भ-श्री अरविन्द, गीता प्रबन्ध, भगवान की अवतरण प्रणाली

कहानी

सच्ची प्रार्थना स्वीकृत हुई

एक संत निःस्वार्थ और पवित्र भाव से सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका सिद्धान्त था, 'न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।' सभी से प्रेम से बोलते और कोई स्नेह से बुलाता तो सहज भाव से चले जाते। किंतु दान-दक्षिणा कभी ग्रहण न करते। एक बार एक श्रद्धालु बहुत बीमार हो गया। उसने काफी चिकित्सा कराई किंतु स्वस्थ नहीं हुआ। जब उसे यह एहसास हुआ कि उसका अंतिम समय किसी भी क्षण आ सकता है तो उसने संत को स्मरण किया, जिन्हें वह गुरु मानता था।

उसके परिजन संत को ले आए। संत ने स्नेहपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेरा तो वह बोला, महाराज ! जीवन के इस अंतिम समय में आप मुझे दुआ दें, ताकि मेरे सभी पाप धुल जाएं और मैं शांति से मर सकूं। संत ने कहा, 'वत्स ! पहले तुम परमेश्वर से अपने उन अपराधों के लिए क्षमा माँगो, जो तुमने जाने-अनजाने में किए हैं।' श्रद्धालु ने अपने हाथ जोड़कर भगवान् से अपने गुनाहों की माफी माँगी। तत्पश्चात् संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, 'हे प्रभु ! जिस प्रकार तूने इसे इसके अपराधों का भान कराया, उसी प्रकार मेरी प्रार्थना स्वीकार कर और इसे चंगा कर दे।'

संत की प्रार्थना, ईश्वर के दरबार में स्वीकृत हुई और आश्चर्यजनक रूप से श्रद्धालु को स्वास्थ्य लाभ हुआ और कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गया। श्रद्धालु ने कुछ भेंट करनी चाही, किंतु उन्होंने यह कहते हुए लेने से इंकार कर दिया कि 'जिसे ईश्वर ने

www.the-comforter.org

अपनी शरण प्रदान की है, उसके लिए धन-दौलत की कोई कीमत नहीं है। मैं अपनी निष्कामता में ही परम सुख पाता हूँ।' सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना में बड़ा बल होता है। अतः ईश्वर के समक्ष सदैव निष्पाप भाव से जाना चाहिए।

इसलिए गुरुदेव सियाग सिद्धयोग से जो साधक लाभान्वित होना चाहते हैं, वे गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित रूप से सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान करते रहें।

निश्चित रूप से परिणाम मिलेगा।

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

गुरुदेव का ध्यान करके देखें !

www.the-comforter.org

असह्य पेट दर्द से मुक्ति।

मैं (सुगना कुमारी), पुत्री श्री रामपाल जी नायक, लगभग दो साल से भयंकर पेट दर्द से परेशान थी, और इस दर्द के लिए मैंने सारे उपाय किए। डॉक्टर को भी दिखाया, जाँचे भी करवाईं पर कुछ नहीं आता था। इसके अलावा देवी देवताओं को भी गई पर कहीं कोई आराम आने का नाम नहीं था ओर मेरी तबीयत दिनों दिन खराब होती जा रही थी।

एक दिन मेरी ये हालत देख कर अशोक मीणा भैया ने मुझे गुरुदेव के दर्शन के बारे में बताया, उनको और पवन वैष्णव जी को आराम आया देख कर मैने विश्वास करके लगातार मंत्र जाप और ध्यान किया। कुछ दिनों में ही मुझे आराम आ गया और आज दो महीने हुए हैं इतने सालो के पेट दर्द से मुझे पूरी तरह आराम आ गया। साथ में, मैं बीमारी की वजह से शारीरिक रूप भी कमजोर हो गई थी और आज गुरुदेव की असीम कृपा से मैं एकदम स्वस्थ हूँ।

सभी से निवेदन है कि लगातार गुरुदेव का मंत्र जाप और ध्यान करो यह हर समस्या का समाधान है।

–सुगना कुमारी, ग्राम – पलसावा,
जिला – बारां, राजस्थान

www.the-comforter.org

अस्थमा से मुक्ति

मैं (धनकंवर), पत्नी श्री ओम प्रकाश मीणा अस्थमा से पीड़ित थी। मैं इतनी परेशान थी कि एक-एक दिन बड़ी ही मुश्किल से निकल रहा था। इस बीमारी की वजह से मैं मानसिक रूप से भी बहुत परेशान रहती थी। ऐसा लगता था ऐसी जिंदगी से तो मौत आ जाए तो अच्छा है।

दिनों दिन मेरी हालत खराब होती जा रही थी लेकिन ये पक्का है कि भगवान् के पास देर है पर अंधेर नहीं। मेरी ये हालत देख एक दिन पवन वैष्णव ने गुरुदेव के दर्शन के बारे में जानकारी दी और उन्होंने बताया कि आप लगातार मंत्र जाप और ध्यान करो, आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे। मुझे उनकी कि बातों पर पूरा विश्वास था क्योंकि मैंने उसके बारे में भी सुना था कि मंत्र जप और ध्यान से उनके हार्ट समस्या में आराम आ गया। इसलिए मैंने रोजाना मंत्र जाप और ध्यान शुरू कर दिया। लगभग 20-25 दिन में ही मुझे आराम मिलना शुरू हो गया और अब मुझे बहुत आराम है। गुरुदेव ने मुझे नई जिंदगी दे दी।

जिस समस्या से मैं 8-10 साल से परेशान थी और 100-200 मीटर चलने में भी मुझे दिक्कत आती थी, आज 1-2 किलोमीटर चलने पर भी मेरी सांस नहीं फूलती।

गुरुदेव बड़े दयालु हैं। सभी को गुरुदेव का मंत्र जाप और ध्यान लगातार करना चाहिए ताकि सभी समस्याओं से छुटकारा मिल सके।

-धनकंवर, ग्राम-पलसावा,
जिला - बारां, राजस्थान

www.the-comforter.org

जीवन में ध्यान का महत्त्व

आध्यात्मिक जीवन का सबसे बड़ा सहायक 'ध्यान' है । ध्यान के द्वारा हम अपनी भौतिक भावनाओं से अपने आपको स्वतंत्र कर लेते हैं और अपने ईश्वरीय स्वरूप का अनुभव करने लगते हैं। ध्यान करते समय हमें कोई बाहरी साधनों पर अवलम्बित नहीं रहना पड़ता ।गहरे अँधेरे स्थान को भी आत्मा की ज्योति दिव्य प्रकाश से भर देती है, बुरी से बुरी वस्तु में भी वह अपना सौरभ उत्पन्न कर सकती है, वह अत्यन्त दुष्ट मनुष्य को भी देवता बना देती है और सम्पूर्ण स्वार्थी भावनाएँ, सम्पूर्ण शत्रुभाव नष्ट हो जाते हैं।

www.the-comforter.org

शरीर का जितना कम ख्याल हो, उतना ही अच्छा, क्योंकि यह शरीर ही है, जो हमें नीचे गिराता है। इस शरीर से आसक्ति और उससे तादात्म्य ही हमारे दुःखों का कारण है। 'मैं आत्मा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ; यह विश्व और उसके सम्पूर्ण संबंध, उसकी भलाई और उसकी बुराई-यह सब एक चित्रावली-चित्रपट पर खिंचे हुए विभिन्न दृश्य हैं और मैं उनका साक्षी हूँ' यह निदिध्यासन ही धर्म जीवन का रहस्य है।

-स्वामी विवेकानन्द जी, साहित्य भाग-3

गतांक से आगे....

चेतना

-श्री अरविन्द

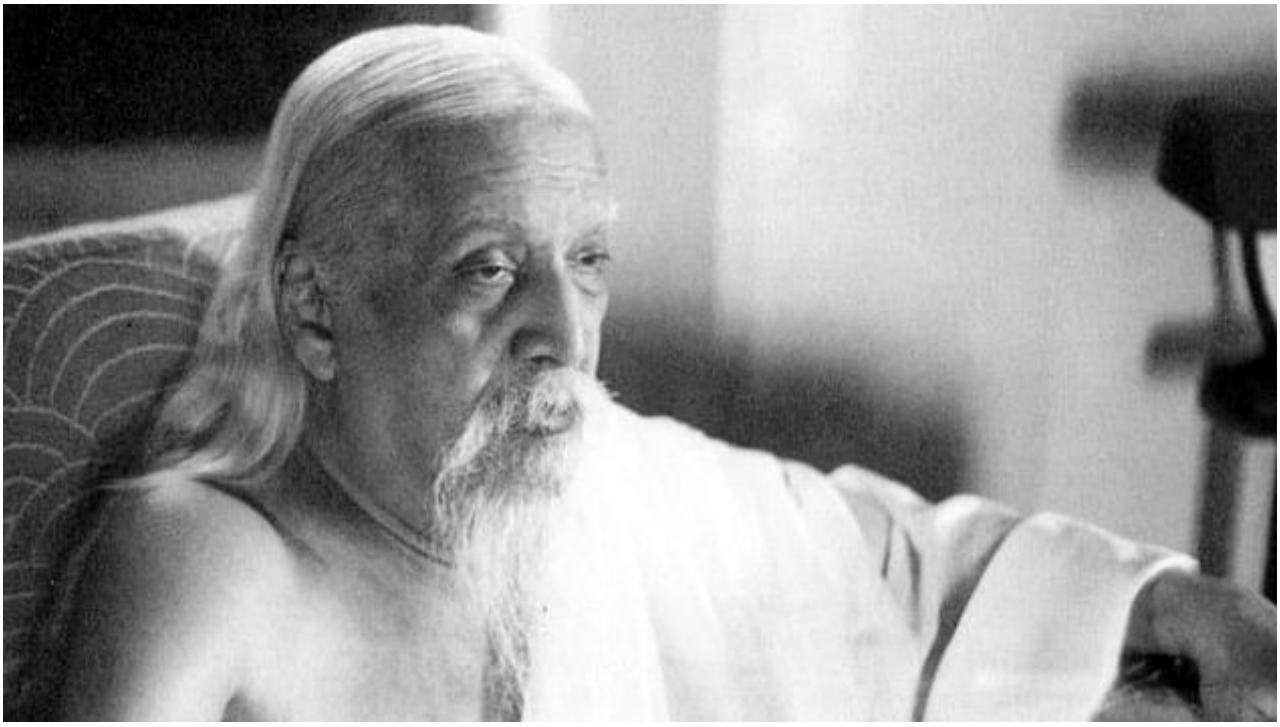

यदि यह सत्य है कि चेतना एक शक्ति है तो इसका विलोम भी सत्य है कि शक्ति चेतना है और समस्त शक्तियाँ चेतनायुक्त हैं। सार्वभौमिक शक्ति एक सार्वभौमिक चेतना है। यह बात है जो साधक खोज निकालता है। जब वह अपने अन्दर चित्-शक्ति की उस धारा के सम्पर्क में आ जाता है तब वह सार्वभौमिक सत्य के किसी भी स्तर पर, किसी भी बिन्दु पर स्थित हो सकता है और वहाँ जो चेतना है, उसे देख और समझ सकता है, अथवा उस पर अपना प्रभाव तक डाल सकता है क्योंकि सब जगह, पौधे में और मानवीय चिन्तन में, प्रकाशमय अतिचेतन में और पशु की नैसर्गिक प्रवृत्ति में, धातु में अथवा हमारे गहरे ध्यान चिन्तनों में चेतना का एक ही प्रवाह है, जिसकी स्पन्दन-शैलियाँ भिन्न-भिन्न हैं। यदि लकड़ी का टुकड़ा चेतना से रहित होता तो योगी चित्त की एकाग्रता द्वारा उसे उसके स्थान से हिलाने की सामर्थ्य न रखता क्योंकि उसके साथ किसी स्थल पर भी

www.the-comforter.org

उसका संबंध न होता। ब्रह्माण्ड का यदि एक भी अंश पूरी तरह चेतना- विहीन होता तो सारा संसार ही पूर्णतः अचेतन होता क्योंकि दो चीजों का अस्तित्व हो नहीं सकता।

आइन्स्टाइन ने हमें सिखा दिया है कि जड़तत्त्व और शक्ति को एक दूसरे में परस्पर बदला जा सकता है - घनीभूत शक्ति ही जड़तत्त्व है, और यह सचमुच बड़ी खोज है। अब हमें व्यावहारिक रूप से यह पता लगाना है कि यह ऊर्जा अथवा यह शक्ति एक चेतना है, और जो जड़तत्त्व है वह भी चेतना का ही एक रूप है जैसे मानस चेतना का एक रूप है, प्राण अथवा अतिचेतन चेतना के अन्य रूप हैं। जब हम इस रहस्य को खोज लेंगे- जब हम शक्ति के अन्दर चेतना को खोज लेंगे तब भौतिक शक्तियों पर हमें सच्चा अधिकार, सर्वथा सुस्पष्ट आधिपत्य, प्राप्त हो जायेगा। पर हम केवल बहुत पुराने सत्यों को फिर से खोज रहे हैं; चार हजार साल पहले ही उपनिषदों के ऋषि यह जानते थे कि जड़तत्त्व घनीभूत शक्तिहै बल्कि यों कहें कि घनीभूत चित्-शक्ति है। 'अपनी चेतना की शक्ति से', ब्रह्म घनीभूत हो गया; उसी से जड़तत्त्व की उत्पत्ति हुई और जड़तत्त्व से, जीवन, मानस और लोक उत्पन्न हुए। (मुण्डक उपनिषद् १.१.८)

इस धरती पर सब चैतन्य ही है क्योंकि सब सत् अथवा परमात्मा है। सब चित् है क्योंकि सब अपनी निजी अभिव्यक्तिके विभिन्न स्तरों पर सत् – सत्-चित् है।

हमारे पार्थिव विकास का इतिहास अन्ततः शक्ति के शनैःशनैः चेतना में बदलने की कहानी है अथवा ज्यादा ठीक रहे यदि कहें कि अपनी शक्ति में निमग्न इस चेतना को फिर से धीरे धीरे अपनी याद आ जाने की कहानी है। उदाहरणतः विकास की प्रारंभिक श्रेणियों में, परमाणु की चेतना अपने आवर्तन में वैसे ही लीन है जो शिल्पी की चेतना सब कुछ भूल कर उस वस्तु में लीन होती है जिसे वह गढ़ रहा हो। इसी तरह पौधा अपने हरियाली लाने के

www.the-comforter.org

काम में लगा रहता है, हमारी अपनी चेतना किसी किताब या किसी इच्छा में लीन हो जाती है और अपनी असलियत के दूसरे सच पहलुओं को भूल जाती है। अन्ततः चेतन तत्त्व को उसके शक्ति तत्त्व से बाहर निकालने या मुक्त करने की क्षमता ही विकास की सारी प्रगति का माप है - इसी को हम ''चेतना का वैयक्तीकरण'' कहते हैं। हमारे विकास के आध्यात्मिक अथवा यौगिक स्तर पर, चेतना पूरी तरह मुक्त हो जाती है, अपने मानसिक, प्राणिक, शारीरिक बवण्डरों से छुटकारा पाकर स्वामिनी आप बन कर परमाणु से लेकर परमात्मा तक चेतना-स्पन्दनों के पूरे ग्राम पर चढ़ने-उतरने के योग्य बन जाती है। अब शक्ति पूरी तरह चेतना बन गई, उसे अपनी पूरी-पूरी याद हो आई। और अपनी याद आ जाने से सब याद हो आता है, क्योंकि हमारे अन्दर वह ब्रह्म है जो सर्वत्र ब्रह्म को पहचान लेता है।

जैसे-जैसे शक्ति अपनी चेतना को पुनः प्राप्त करती जाती है, वैसे ही वह अपनी शक्ति और अन्य सब शक्तियों पर अधिकार पाती जाती है। क्योंकि सचेत होना है समर्थ होना। परमाणु जो तेजी से घूम रहा है अथवा मनुष्य जो जीवनचक्र में घूम रहा है और मानस के कारखाने में परिश्रम कर रहा है, वह अपनी मानसिक, प्राणिक अथवा आणविक शक्तियों का स्वामी नहीं है। वह तो चक्कर ही काटे जा रहा है। इसके विपरीत चेतन स्तर पर हम मुक्त होकर स्वामी बन जाते हैं। तब हमें स्पष्ट प्रमाण मिल जाता है कि चित् एक शक्ति है, एक द्रव्य है जिसका उसी तरह उपयोग किया जा सकता है जिस तरह लोग ऑक्साइडों और विद्युत्- क्षेत्रों से काम लेते हैं।

श्री अरविन्द का कहना है, यदि मनुष्य अन्दर की चेतना से अवगत हो जाये तो उसके द्वारा बहुत कुछ कर सकता है, उसे शक्तिप्रवाहवत् बाहर भेज सकता है, अपने चारों ओर चेतना का घेरा या दीवार बना सकता है, किसी विचार के ऐसे लक्ष्य करके, भेज सकता है कि वह अमरीका में

www.the-comforter.org

स्थित किसी व्यक्ति विशेष के मस्तक में प्रवेश करे, इत्यादि।

वे आगे बताते हैं, यह अदृश्य पराशक्ति अन्दर और बाहर प्रकट परिणाम उत्पन्न करे, यही तो यौगिक चेतना का सारा उद्देश्य है।... यदि हमें हजारों बार ऐसे अनुभव न हो चुके होते, जो यह सिद्ध कर चुके हैं कि मानस में परिवर्तन करना, उसकी क्षमताओं का विकास करना, उसे नई क्षमताएँ प्रदान करना, ज्ञान के नए क्षेत्र खोलना, प्राण की चेष्टाओं को वश में लाना, चरित्र में परिवर्तन करना, मनुष्यों और वस्तुओं पर प्रभाव डालना, शरीर की अवस्था और अंगों के कार्यनिष्पादन पर नियन्त्रण रखना, एक ठोस गतिशील महाशक्ति के रूप में विभिन्न शक्तियों पर कार्य करना, घटनाओं में परिवर्तन करना, इत्यादि आन्तरिक शक्तिके लिए संभव है तब हम उसके विषय में इस तरह बात न करते। फिर यह पराशक्ति केवल अपने परिणाम में ही नहीं बल्कि अपनी गतिविधि में भी स्पष्ट और ठोस है। जब मैं शक्ति अथवा बल का एहसास होने की बात करता हूँ, मेरा मतलब केवल धुंधला-सा कुछ उसका आभास होना नहीं बल्कि उसे मूर्त रूप में महसूस करना और परिणामतः उसको निर्देश देने, उसे काम में लगाने, उसकी गतिविधि का निरीक्षण करने, उसकी मात्रा और तीव्रता का ध्यान रखने की योग्यता रखना है और ठीक उसी तरह जैसे अन्य विरोधी शक्तियों के विषय में।

आगे चल कर हम देखेंगे कि चेतना जड़तत्त्व पर भी प्रभाव डाल सकती है और उसका रूपान्तर कर सकती है। अन्त में जड़तत्त्व का चेतना में रूपान्तरण और संभवतः किसी दिन चेतना का भी जड़तत्त्व में रूपान्तरण, यह अतिमानसिक योग का लक्ष्य है जिसके बारे में हम आगे बतायेंगे। परन्तु साधक या अभीप्सा करने वाला जो अभी आन्तरिक प्रेरणा की ओर जरा जगा भर है उससे लेकर योगी तक चित्-शक्ति के विकास की बहुत-से स्तर हैं और योगियों

www.the-comforter.org

में भी कई दर्जे हैं - इससे ही सच्चा वर्गीकरण प्रारंभ होता है।

एक अन्तिम सादृश्य है। चेतना केवल शक्तिही नहीं, चेतना केवल सत्ता ही नहीं बल्कि चेतना आनन्द भी है। चित् आनन्द। चैतन्ययुक्त होना ही है आनन्द। जब मनुष्य मानसिक, प्राणिक, शारीरिक उन हजारों स्पन्दनों में लीन चेतना को मुक्त कर लेता है, तब वह आनन्द को खोज पाता है। सारी सत्ता मानो सजीव शक्ति पुंज से भर जाती है ('एक सुगठित स्तम्भ सदृश' ऋग्वेद में कहा है, ५.४५.२) जो स्फटिक के समान स्वच्छ, निस्पन्द, निरुद्देश्य है - शुद्ध चैतन्य, शुद्ध शक्ति, शुद्ध आनन्द, क्योंकि वह एक ही चीज है - एक ठोस आनन्द, एक विशाल, शान्त आनन्द-द्रव्य जिसका मालूम होता है न आदि है, न अन्त, न ही है कोई हेतु; मालूम होता है वह सभी जगह विद्यमान है, वस्तुओं में, प्राणियों में, उनका गुह्य आधार तथा विकास की गूढ़ आवश्यकता है।

चूंकि वह सर्वत्र विद्यमान है इसलिए कोई भी मनुष्य जीवन को छोड़ना नहीं चाहता। अपने अस्तित्व के लिए वह किसी पर निर्भर नहीं करता, वह है, वह सब युगों में, दिग्दिगन्तर से, चट्टान की तरह, हर वस्तु के पीछे एक मुस्कान की तरह, सब जगह है और उसका निराकरण संभव नहीं। ब्रह्माण्ड की सारी पहेली यही है, अन्य कुछ नहीं।

एक मन्द मुस्कान, एक नाचीज जो सब कुछ है। और यह सब आनन्द है क्योंकि सब ब्रह्म है, जो आनन्दरूप है, सच्चिदानन्द, शाश्वत् त्रिमूर्ति, संसार वही है, हम भी वही हैं-यह वह रहस्य है जिसे विकास की लम्बी यात्रा के दौरान खोज कर हमें जीवन में उतारना है- 'आनन्द से इन सब जीवों की उत्पत्ति है, आनन्द से उनका अस्तित्व और वृद्धि है, आनन्द में उनकी निवृत्ति है।' (तैत्तिरीय उपनिषद् ३.६)

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

एक बार लल ईश्वर के ध्यान में, सड़क के किनारे एक पत्थर पर बैठी थी। उसके शरीर पर कटे-फटे वस्त्र लटक रहे थे, जिनसे उसका शरीर भी पूरी तरह नहीं ढक पा रहा था। किन्तु वह अपने शरीर की ओर से पूरी तरह उदासीनता धारण किए बैठी थी। सड़क पर लोगों का आना-जाना निरन्तर बना था।

लोग उसके पास से निकलते थे तो उस ओर कामुक-दृष्टि से देखते हुए जाते थे। किन्तु कुछ लोगों को सभ्यता उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देती थी वह नजरे नीची करके निकल जाते थे। पर लल इस बात की ओर से पूरी तरह उदासीन थी। उसका प्राण ईश्वर की ओर ही लगा था। तब उस रास्ता चलते लोगों में से एक व्यक्ति उसके काफी समीप आ गया।

उसे समीप आया देखकर लल एकाएक अपने शरीर को चीथड़ों में लपेट लेने का प्रयत्न करने लगी। तब उस व्यक्ति ने कहा, 'मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि तुम ईश्वर के ध्यान में तल्लीन हो किन्तु तुमने अपने शरीर की कैसी दशा बना रखी है, अस्त व्यस्त, अपर्याप्त वस्त्र, अर्धनग्न अवस्था। सभी लोग एक समान नहीं होते। कुछ नजरें नीची करके निकल जाते हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारे शरीर को ललचाई नजरों से देखते हैं किन्तु तुम सबकी ओर से लापरवाह हो। जब इतने लोग तुम्हारे सामने से आ जा रहे हैं तो फिर मेरे सामने आ जाने पर

www.the-comforter.org

ही तुमने अपने शरीर को छिपा लेने का प्रयास क्यों किया? क्या तुमने मेरी नजरो में कोई बुराई देखी है?'

लल- 'मेरे सामने से निकल कर जाने वालों में कोई पुरुष है भी? मुझे सब स्त्रियां ही दिखाई दे रही हैं। स्त्री को स्त्रियों से कैसा पर्दा? अथवा एक भी ऐसा व्यक्ति हो जिसकी आँखें हो ? अंधों से कैसा पर्दा? फिर मैं इस अशुद्ध एवं अव्यवस्थित शरीर वाली, इस देह को ढक लेने का प्रयास किस कारण करती रहूं? अंधों को भला कुछ दिखाई देता है ? स्त्रियों से एक स्त्री को परदादारी की क्या आवश्यकता है ? आप ही मुझे, दृष्टि वाले तत्त्वज्ञानी एक पुरुष दिखाई दिए हो। जिसके कारण मैंने, आपके आने पर, चीथड़ों में लपेटे इस शरीर को ढक लेने का प्रयास किया।

योगी किससे, कब, कैसा व्यवहार करता है, इसको समझ पाना सामान्य जन के लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। योगियों के आन्तरिक अनुभव संसार से गुप्त रहते ही हैं। उनकी व्यवहारिकता का अधिकांश भाग भी लोगों की दृष्टि से ओझल बना रहता है। लल का उपरोक्त क्रियात्मक स्वरूप उन लोगों के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है जो अपने- आपको कहते-मानते तो योगी हैं, योगी की तरह दिखावा भी करते हैं, बात-बात में योग की दुहाई भी देते हैं, किन्तु यदि उनके क्रियात्मक व्यवहार तथा समझ को परखा जाय तो उनमें योग का कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देता। योगी सदैव निर्भय बना रहता है जबकि तथाकथित योगी भय, आतंक तथा भ्रमात्मक संशयों में जीवन व्यतीत करते हैं। योग की बड़ी ऊँची बातें करते हैं जबकि सामर्थ्य नाम को भी नहीं होता। योग तथा आध्यात्मिकता केवल वाचालता का विषय नहीं। पहले स्वयं करना, आन्तरिक अनुभव तथा सामर्थ्य प्राप्त करना तथा यदि आवश्यक हो तो दूसरे को भी अनुभव प्राप्त करा सकने की क्षमता का नाम योग है।

इसके लिए दीर्घकालीन, कठिन

www.the-comforter.org

साधन, उत्कट वैराग्य, सेवा तथा प्रेम, समर्पण एवं सहनशीलता, गुरु शक्ति की कृपा तथा मन की निर्मलता की आवश्यकता है। कौन जानता है कि लल कितने जन्मों से साधना में तत्पर थी? उसे क्या कुछ नहीं देखना पड़ा होगा? तथा उसने कितना मान-अपमान सहन किया होगा? इस जन्म में भी, जब कि वह साधान तथा आध्यात्मिकता में काफी आगे तक जा चुकी थी, उसके ससुराल वालों ने उसका जीना दूभर कर रखा था। सर्वसमर्थ होते हुए भी उसने अभाव-ग्रस्त जीवन-यापन का मार्ग चुना। आज जब प्रायः साधक धन को छाती से चिपकाए रखते हैं अथवा धन के पीछे बावले बने हैं, लल का जीवन उनके लिए आदर्श रूप है। लल ने यथासंभव अपने-आपको जगत प्रसिद्धि से दूर रखा क्योंकि वह उसके दुष्प्रभावों एवं दुष्परिणामों से भली भांति अवगत थी।

साधन के अत्यन्त दुर्गम पथ पर, साधक को पग-पग पर गुरु-कृपा की आवश्यकता अनुभव होती रहती है। जितने उच्च स्तर का साधक, उतने ही - आसन पर आसीन गुरु तत्त्व साधन में सहायक हो सकता है। वास्तविकता तो यह है कि साधक साधन नहीं करता, गुरुतत्त्व ही करता है। साधक की साधन-सीमा अधिकाधिक समर्पण पर आधारित तथा सीमित है। गुरु-शक्ति का शिष्य के प्रति क्रियाशील होना ही यथार्थ गुरु कृपा है। लल को भी आगे बढ़ने के लिए किसी सर्व समर्थ, ज्ञान-शिला पर विराजमान् पूर्ण तथा सच्चे गुरु की कृपा की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। वह इस कठिन मार्ग की काफी लम्बाई तय कर चुकी थी किन्तु फिर भी अभी काफी लम्बी दूरी शेष थी। कई प्रकार की अकल्पिता-सिद्धियाँ उसमें प्रकाशित हो चुकी थीं किन्तु वह सिद्धियों की निस्सारता से अवगत थी। साधक में अभिमान जाग्रत हो उठने पर सिद्धियाँ ही पतन का

www.the-comforter.org

कारण बन जाती हैं। उसका चित्त काफी निर्मल हो चुका था किन्तु माया के झीने से आवरण को उठा पाने में वह कठिनाई अनुभव कर रही थी। वैसे यह आवरण अत्यन्त ही पतला था किन्तु इसमें जगत-विस्तार का बीज निहित था। इस आवरण के एक ओर जगत् था तो दूसरी ओर अध्यात्म। आन्तरिक वृत्ति किसी भी ओर लुढ़ककर जा सकती थी। इस माया के बीज को समाप्त करने के लिए ईश्वर की, गुरुदेव की, विशेष अनुकम्पा की आवश्यकता थी। इसके लिए अन्य कोई भी साधन नहीं था, कृपा ही एकमात्र उपाय था। पुरुषार्थ की तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं थी।

लल की खोजी दृष्टि इधर-उधर, यहाँ-वहाँ ऐसे समर्थ गुरु की तलाश में भटकती फिरती थी। लल की कुछ इस प्रकार धारणा थी कि ऐसे समर्थ गुरु बीहड़ वनों, जंगलों, पर्वत-शिखरों, गिरि-कन्दराओं अथवा उजाड़ पड़े खाण्डहरों में ही मिल सकते हैं। जन-संपर्क में आने वाले गुरु प्रायः लेखाक, प्रवचन-कर्ता, बौद्धिक-विद्वान, वाचाल, गायक अथवा कलाकार तो हो सकते हैं, वह प्रबंध करने में भी कुशल सिद्ध हो सकते हैं किन्तु आध्यात्मिकता के उच्च शिखरों का स्पर्श कर पाना उनके लिए प्रायः कठिन होता है। सूक्ष्म स्तरों पर रमण करने वाले महापुरुष अपने-आपको भौतिकता से दूर ही रखते हैं। वह सूक्ष्म शरीर में अदृश्य रहकर साधनरत हो, अथवा स्थूल शरीर में वास करते हुए आध्यात्मिकता की सूक्ष्मताएं तलाशने में व्यस्त रहते हों, किन्तु उनका मन सदैव सूक्ष्म विचारों, भावनाओं, अनुभवों एवं सूक्ष्म स्तरों पर ही तरंगित बना रहता है। उनकी किसी के भी अन्तर्मन तक गति संभव है। वह किसी का जीवन बदल डालने की क्षमता रखते हैं। वह शरीर की सीमाओं में बंधे होने पर भी समष्टि-चैतन्य का ही अंश होते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

आंतरिक चेतना के विकास द्वारा समस्याओं का समाधान

''मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं एड्स ठीक करता हूँ, मैं बीमारी ठीक करता हूँ, मैं नशा छुड़वाता हूँ-कभी नहीं कहा जीवन में, 15 साल के जीवन में। मैं तो कहता हूँ आपके अंदर चेतना है, मैं एक तरीका बताऊँगा जिससे आपके अंदर बैठा डॉक्टर जो है वो चेतन हो जाएगा।

वो आपके अंदर वाला डॉक्टर और बाहर वाला डॉक्टर जिससे आप ईलाज करवा रहे हो, उसके दोनों के मिलाकर ईलाज करने से फिर कोई रोग इन्क्योरेबल (असाध्य) नहीं रहेगा।'' **-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग**

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

मृत्यु का एक कारण यह कड़ा होते जाना है सत्य स्पंद को स्थापित करने में यह बड़ी रुकावट है। जब हम किसी आघात के कारण कड़े हो जाते हैं, तब प्रतिरक्षा के रूप में हमारी सारी प्राणशक्ति एक स्थल पर सिमट आती है और यकायक एक छोटे से छेद से विपुल प्रवाह बहने लगता है।

वह लाल पड़ जाता है, कष्ट देता है। यदि हम अपनी शारीरिक चेतना का विस्तार करना और उस आघात को दूर फेंकने की जगह अपने अंदर समा लेना जानते हों तो हमें कष्ट नहीं हो। जिस स्तर पर भी हो, जैसा भी हो, कष्ट है चेतना की संकीर्णता। पर यह तो समझना कठिन नहीं कि यदि अतिमानस की वह तप्त सुवर्णरज एकबारगी ही कोशाओं में उतर आये और प्रतिक्रिया स्वरूप कहीं शरीर अपनी आदत के अनुसार कड़ा होना शुरू कर दे तो सब फूट जाये, टुकड़े-टुकड़े हो जाये। तात्पर्य यह कि मानसिक और प्राणिक चेतना की ही तरह हमारी कोशीय चेतना को भी

www.the-comforter.org

विशाल बनना, और सारे जगत् में फैलना सीखना होगा। यह जरूरी है कि वहाँ भी विश्वीय चेतना का प्रवेश हो। मानस की नीरवता में हमारी मानसिक चेतना का वैश्वीकरण होता है। प्राण के शांत हो जाने पर हमारी प्राणिक चेतना का वैश्वीकरण होता है। शरीर की नीरवता में शारीरिक चेतना का वैश्वीकरण होता है। शरीर में अग्नि को सहन करने के लिए और उसके स्थायित्व के लिए निश्चलता, ग्रहणशीलता और कोशीय विशालता सबसे पहली शर्तों में से मालूम होती हैं।

परन्तु शारीरिक चेतना के वैश्वीकरण की बात उठते ही एक भारी कठिनाई तुरंत सामने आ खड़ी होती है। अब जो केवल एक ही शरीर रह गया तो दूसरे सब शरीर उस पर आ टूटे, संसार के सारे झूठ आ धमके... अब यह एक मनुष्य का नहीं, सारे संसार का संग्राम बन गया। और असल उलझन अब हमारे सामने मौजूद है। इस शारीरिक स्वच्छता के अंदर, साधक एक और कठोर खोज का सामना करता है। वह यह देखता है कि उसकी सारी योग शक्ति नष्ट हो गई। सब रोगों पर, सभी शारीरिक क्रियाओं पर वह बहुत पहले विजय प्राप्त कर चुका था, और संभवतः गुरुत्वाकर्षण पर भी उसे प्रभुत्व रहा हो। इतनी शक्ति वह रखता था कि विष निगल ले तो भी उसे कुछ न हो। संक्षेप में, वह अपने घर का स्वामी था, क्योंकि शासन उसकी चेतना कर रही थी। किन्तु जिस क्षण उसने इस शरीर का रूपांतर करने की ठान ली, उसी दिन उसकी सारी योग शक्ति हठात् बालू के अंदर पानी की तरह न जाने कहाँ लुप्त हो गई।

www.the-comforter.org

बीमारियाँ उस पर ऐसी आ टूटीं मानो वह एक नौसिखिया हो। शरीर के अंग क्षीण होने लगे, सब गड़बड़ा गया। ऐसा लगता है कि शरीर को अपनी पुरानी, झूठ से भरी सारी क्रियाएँ, जिनका ह्रास होता रहता है, भुला कर सब कुछ दोबारा, नयी विधि के अनुसार सीखना होगा और फिर मौत इस दृश्य में प्रवेश करती है। इन दोनों क्रियाओं के एक पुरानी और दूसरी इस नयी के, जिसे प्रतीकात्मक अंगों के स्थान ने दिव्य स्पंद को लाना है, बीच की वह रेखा जो मृत्यु को जीवन से पृथक कर रही है, कभी-कभी बहुत ही बारीक होती है।

सची विजय प्राप्त करने के लिए शायद इस रेखा के उस पार जाकर वापिस आने की भी क्षमता होनी आवश्यक हो? इसी चीज को श्री माँ ने अपनी एक अनुभूति के बाद, जिससे वापिस ही न लौटने से वह बस बाल-बाल बच गई, मृत्यु के प्रति मरण बताया था। मतलब कि हर चीज का सामना करना जरूरी है और हर चीज विरोध करती है। किन्तु चेतना के ऊर्ध्व स्तरों पर इस चीज से हमारा पहले ही परिचय हो चुका है। ज्योंहि साधक ने पैर बढ़ाया नहीं कि सब तरफ गड़बड़ शुरू हुई नहीं । वह समझता था कि उसका मानस सत्य के अंदर परा स्थिर हो चुका और यह लो, आक्रमणकारी सुझावों और अविश्वासों का उसके सामने तांता ही लग गया। वह अपने आपको पवित्र और बड़ा ईमानदार समझे बैठा था और प्राण की ऐसी भयानक चीजें, उसे एक के बाद एक मिलीं जिनके आगे संसार के बड़े से बड़े बदमाशों का भी हौसला छूट जाये, और कुछ अन्य भी जो कि इस लोक से संबंध तक नहीं

www.the-comforter.org

रखतीं । बात वही है जो श्री अरविन्द पहले ही बता चुके हैं कि कोई समस्या चाहे वह किसी भी स्तर की क्यों न हो, तब तक हल नहीं की जा सकती जब तक कि चरम लक्ष्य के सभी विरोधी तत्त्वों का सामना न कर लिया जाये। अन्यथा वह विजय नहीं, दमन होगा।

कहीं भी, किसी भी स्तर पर, हमें बुराई को काट नहीं फेंकना है, बल्कि उसके स्वकीय प्रकाश के प्रति उसके अंदर प्रतीति जगानी है। वह योगी जो अपनी शक्ति द्वारा बीमारियाँ दूर कर देता था, उसने उस सवाल को हल नहीं कर लिया था। रोग शक्तियों का उसने केवल मुंह बंद कर दिया था। अब यह समझना तो कठिन नहीं कि शक्तियों को केवल चुप करा देने भर से रूपांतर हो जाना संभव नहीं जबकि वे मौके की ताक में इधर-उधर मंडराती रहें। और क्योंकि संसार में से कुछ भी कटछंट नहीं सकता इसलिए जरूरी है कि उनका रूपान्तरण हो। पर कैसे ? मौत और बीमारियाँ तो सब जगह हैं। वे शरीरों के, संसार के सब शरीरों के अवचेतन बैठी हैं।

जिस योगी ने बीमारियों को जीत लिया था, मौत को चुनौती दी थी जो कि बहुत देर नहीं चला और यही उचित भी है-उसने विजय प्राप्त की थी अपने लिए और यही कारण था कि वह सचमुच विजय नहीं कर पाया। हे, परम विधान की अद्भुत दूरदर्शिता ! अपना संरक्षक कवच रच कर वह उसमें एक प्रकाश-शावक की तरह बंद रह रहा था, और बाकी सब कुछ पहले की ही तरह अपने चारों ओर चलने दे रहा था।

पर जिस क्षण कवच खुल जाये तो फिर से सब अंदर आ घुसता है। देह

www.the-comforter.org

एक है ! समीप खड़े बैल पर पड़ते हुए कोड़ों की निर्दय मार से श्री रामकृष्ण की पीठ का उपड़ आना, अथवा ज्ञात न होने पर भी श्री माँ का सैकड़ों किलोमीटर दूर एक शिष्य को पीड़ित करने वाले रक्तस्राव के साथ द्वंद करना, पूरी समस्या को हमारे सामने ला खड़ा करता है – देह सर्वत्र है ! श्री माँ कह रही हैं। सब जगह विजय प्राप्त करने की जरूरत है, सभी देहों के लिए, सारी पृथ्वी के लिए। किसी भी चीज़ का रूपांतर करना संभव नहीं यदि सबका रूपांतर न किया जाये।

अन्यथा एक, एकाकी पड़े रहो अपने प्रकाश-गर्त में ! और उससे लाभ क्या ? अन्य सब नष्ट होता ही जाये तो एक अकेले मनुष्य का रूपांतर किस काम का ?

सो रूपांतर का नेतृत्व करने वाले की देह एक संग्रामभूमि है और वहाँ युद्ध चल रहा है सबका, सारे संसार का। सब वहाँ परस्पर मिलता है, और सब वहाँ प्रतिरोध करता है। ठीक तली में, नीचे एक केन्द्रीय बिन्दु है, जीवन और मरण की एक ग्रंथि है जहाँ संसार के भाग्य की बाज़ी लगी है। सब एक बिन्दु में सिमट आया है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

मंगलवार ५ जनवरी माघ ब. १ वि. २१ पौष सं. २०४४

काव्य का आनन्द रसिकी के अनुभव द्वारा होता है

धर्म क्या है?

इस समय संसार भर के सभी धर्मों के धर्माचार्य केवल प्रदर्शन, शब्द जाल, तर्क शास्त्र और अन्ध विश्वास के सहारे लोगों को आध्यात्मवाद सिखा रहे हैं। शब्द जाल और तर्क शास्त्र के सहारे धर्म की व्याख्या इस प्रकार तोड़ मरोड़ करके कर रहे हैं कि धर्म एक प्राण हीन मुर्दा लाश (शव) मात्र रह गया है। निष्प्राण धर्म कल्याण किस प्रकार कर सकता है? सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने धर्म को एक व्यवसाय बना लिया है। धर्म के सहारे आर्थिक तथा राजनैतिक लाभ उठाया जा रहा है। ऐसा लग रहा है मानो संसार के सभी धर्माचार्यों को पक्का विश्वास हो गया है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति संसार में है ही नहीं। यह केवल कार्ल मार्क्स के धारणा लोगों में फैलाई हुई है। इस झूठी धारणा के सहारे जितना चाहे प्राणियों का शोषण कर सकते हो। ऐसा लगता है कुए ही भांग पड़ गई है। सभी धर्म एक ही रास्ते पर चलने लगे हैं। सभी धर्माचार्य अगले जन्म में मिलने का झूठा झांसा देकर संसार को लूट रहे हैं। धन के आधार पर पाप माफी का प्रमाण पत्र तक देने लगे हैं। इससे घोर अपराध क्या होगा। अगर ऐसी विषम स्थिति में भी भगवान अवतार नहीं लेते हैं तो समझ लेना चाहिए कि प्रलय का समय बहुत सन्निकट है। आज संसार में धर्म के नाम पर लूट, अन्याय और अत्याचार जितना पनप रहा है उतना पहले कभी नहीं हुआ। हमारा इतिहास बताता है कि जब-जब ही ऐसी स्थिति पैदा हुई है, भगवान ने अवतार लिया है।

धर्म की व्याख्या करते समय हमारे ऋषियों ने स्पष्ट कहा है, कि धर्म प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्क शास्त्र और अन्ध विश्वास से इसका दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। पिछली सदी में स्वामी विवेकानन्द जी संसार में एक आध्यात्मिक संत के रूप में प्रकट हुए। अमेरिका में उन्होंने धर्म की व्याख्या

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

बुधवार ६ जनवरी माघ बदी २ वि. २२ पौष सं० २०४४

प्रेम मित्रता महान गुण है

करते हुए कहा था "विभिन्न मत मतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का नाम हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूल मंत्र तो 'मैं' हूँ यह विश्वास होना और तद्रूप बन जाना है"।

आत्मा

इसी संदर्भ में स्वामी जी ने एक कदम और आगे बढ़ कर कह डाला कि:-

"अनुभूति: अनुभूति की यह महती शक्तिमय वाणी भारत के ही आध्यात्मिक गगन मण्डल से आविर्भूत हुई है। एक मात्र हमारा वैदिक धर्म ही है, जो बारम्बार कहता है, ईश्वर के दर्शन करने होंगे, उसकी प्रत्यक्षानुभूति करनी होगी, तभी मुक्ति संभव है। तोते की तरह कुछ शब्द रट लेने से काम चल ही नहीं सकता"। स्वामी जी ने धर्म के सम्बन्ध में स्पष्ट शब्दों में यहां तक कह दिया:- "यदि धर्म में प्रत्यक्षानुभूति न हो तो वह वास्तव में धर्म कहलाने योग्य है ही नहीं"। क्या इस समय संसार के किसी भी धर्म का धर्माचार्य उपरोक्त बात दोहराने की स्थिति में है? इस समय तो ईश्वर और धर्म की अपनी २ तर्क बुद्धि के अनुसार अजीब २ व्याख्या करके धर्माचार्य संसार के लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार की बात करने तक का साहस किसी में दिखाई नहीं देता।

इस समय संसार में मनुष्य जाति में एक ऐसा विशेष वर्ग पैदा हो गया है जो ईश्वर तथा धर्म का एक मात्र ठेकेदार अपने आप को घोषित कर बैठा है। अगर आपको आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करना है तो उसके प्रमाण पत्र के बिना काम नहीं चलेगा। अपने प्रमाण पत्र की वह भरपूर कीमत लेकर आपको जिस रास्ते पर चलने का आदेश देगा उसी पर आपको चलना होगा। जो मान्यताएं उस वर्ग विशेष ने बना रखी हैं वही धर्म सम्मत है, बाकी सब रास्ते नरक में ले जाने वाले अधर्म के हैं। इस समय संसार में धर्म के नाम पर भीख से लेकर हत्या तक की छूट है। कैसा भयंकर रूप बना डाला इस युग के मानव ने धर्म का। इस युग का मानव धन के लिए धर्म की ओट में घृणित से घृणित कार्य करने से भी नहीं झिझकता। ऐसी स्थिति में संसार में शान्ति, प्रेम, दया और सद्भाव कैसे सम्भव है। [illegible] 4/2/88

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

अगर इन सब प्रतिक्रियाओं से बचा भी जा सके तो भी उपवास की कोई पर्याप्त उपयोगिता नहीं है, क्योंकि उच्चतर शक्ति मत्ता और ग्रहणशीलता किसी कृत्रिम या भौतिक उपाय से नहीं आनी चाहिये, बल्कि चेतना की तीव्रता और साधना के लिये दृढ़ संकल्प के द्वारा आनी चाहिये।

जिस रूपांतर को सिद्ध करने की अभीप्सा हम करते हैं, वह इतना विशाल और जटिल है कि उसे एक साथ ही पूरा-पूरा नहीं प्राप्त किया जा सकता; उसे क्रमशः एक-एक स्तर पार करते हुए ही प्राप्त करना होगा। भौतिक परिवर्तन इनमें से सबसे अंतिम स्तर है और यह स्वयं भी एक प्रकार की क्रमोन्नति की प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त होता है।

आंतरिक रूपांतर किसी भी भौतिक उपाय से-चाहे वह भावमूलक हो या अभावमूलक, नहीं सिद्ध किया जा सकता। बल्कि इसके विपरीत, स्वयं भौतिक परिवर्तन भी केवल तभी साधित हो सकेगा जब महत्तर अतिमानसिक चेतना शरीर के कोशों में अवतरित होगी। जब तक ऐसा नहीं होता कम-से-कम तब तक भोजन, निद्रा आदि साधारण उपायों से आंशिक रूप में शरीर तथा शरीर को सहारा देनेवाली शक्तियों का भरण-पोषण करना होगा। यथोचित मनोभाव और समुचित चेतना के साथ आहार ग्रहण करना होगा; निद्रा को धीरे-धीरे यौगिक विश्राम में परिवर्तित करना होगा।

असामयिक और अत्यधिक शारीरिक तपस्या आधार के विभिन्न भागों की शक्तियों में हलचल और अस्वाभाविकता उत्पन्न करके

www.the-comforter.org

साधना की प्रक्रिया में बाधा पहुंचा सकती है। उससे मनोमय और प्राणमय भागों में एक विपुल शक्ति प्रवाह प्रवेश कर सकता है, परंतु उससे स्नायु-मंडल और शरीर अत्यंत क्लांत हो जा सकते तथा उन उच्चतर शक्तियों की क्रिया को धारण करने की शक्ति खो सकते हैं। यही कारण है कि यहां पर किसी भी आत्यंतिक शरीर तपस्या को साधना के प्रधान अंग के रूप में नहीं स्वीकार किया गया है।

कभी-कभी एक या दो दिन उपवास करने या आहार की मात्रा को इस प्रकार कम कर देने में कि वह बहुत कम तो हो पर शरीर के लिये पर्याप्त हो, कोई हानि नहीं है; परंतु दीर्घकाल तक एकदम निराहार रहना उचित नहीं।

प्राण और शरीर के ऊपर जो कामावेग का आक्रमण होता है उससे साधक को एकदम दूर हट जाना होगा क्योंकि, यदि वह कामावेग पर विजय न प्राप्त कर ले तो उसके शरीर में दिव्य चेतना और दिव्य आनंद कभी स्थापित नहीं हो सकते।

यह सच है कि केवल वासनाओं का निग्रह करना या उन्हें दबाये रखना पर्याप्त नहीं है, केवल उतने से ही वास्तव में कोई लाभ नहीं होता; परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि वासनाओं को प्रश्रय दिया जाये; इसका मतलब यह है कि वासनाओं का केवल निग्रह नहीं करना होगा, बल्कि उन्हें प्रकृति से बाहर निकाल फेंकना होगा। वासना के स्थान में होनी चाहिये भगवान् के लिये अनन्य अभीप्सा।

रही प्रेम की बात, सो प्रेम को एकमात्र भगवान् की ओर ले जाना होगा। साधारणतः मनुष्य जिस चीज को उस नाम से पुकारते हैं वह होता

www.the-comforter.org

है वासना की, प्राणगत आवेग की या शारीरिक सुख की पारस्परिक तृप्ति के लिये किया गया प्राण का आदान-प्रदान ।साधकों में इस प्रकार का कोई भी आदान-प्रदान नहीं होना चाहिये; क्योंकि ऐसे आदान-प्रदान की खोज करने या इस प्रकार के आवेग को प्रश्रय देने से साधनमार्ग से चले जाने के सिवा अन्य कोई फल नहीं होता।

इस योग का सारा सिद्धांत ही है अपने-आपको पूर्ण रूप से एकमात्र भगवान् को दे देना, -और किसी व्यक्ति और किसी चीज को नहीं, -तथा भागवती मातृशक्ति के साथ ऐक्य स्थापित कर अपने अंदर भगवान् के अतिमानस-स्वरूप की विश्वातीत ज्योति, शक्ति विशालता, शांति, पवित्रता, सत्य-चेतना और आनंद को उतार लाना।

अतएव इस योग में दूसरों के साथ किसी भी प्रकार का प्राणज संबंध स्थापित करने या आदान-प्रदान करने की कोई गुंजाइश नहीं; ऐसा कोई भी संबंध या आदान-प्रदान तुरंत ही अंतरात्मा को निम्न चेतना और उसकी निम्नतर प्रकृति के अंदर बांध डालता है, भगवान के साथ सच्चा और पूर्ण एकत्व स्थापित नहीं होने देता और अतिमानसिक सत्य-चेतना में आरोहण तथा अतिमानसिक ईश्वरीय शक्ति के अवरोहण -इन दोनों ही कार्यों में बाधा उपस्थित करता है। और अगर यह आदान-प्रदान कहीं कामज संबंध का या कामोपभोग का रूप धारण कर ले- भले ही किसी भी बाह्य क्रिया से इसे अलग रखा जाये तो यह और भी बुरा

www.the-comforter.org

होगा: अतएव ये सब बातें साधना में एकदम वर्जित हैं। यह कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं कि ऐसी कोई भी स्थूल क्रिया करने की मनाही है बल्कि यहां तक कि इसके किसी सूक्ष्मतर रूप को भी प्रश्रय नहीं दिया जाता। जब हम भगवान् के अतिमानसस्वरूप के साथ एकत्व प्राप्त कर लेते हैं केवल तभी हम भगवान् के अंदर दूसरों के साथ अपना सच्चा आध्यात्मिक संबंध स्थापित कर सकते हैं; उस उच्चतर एकत्व में इस प्रकार की स्थूल निम्नतर प्राणक क्रिया के लिये कोई स्थान नहीं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

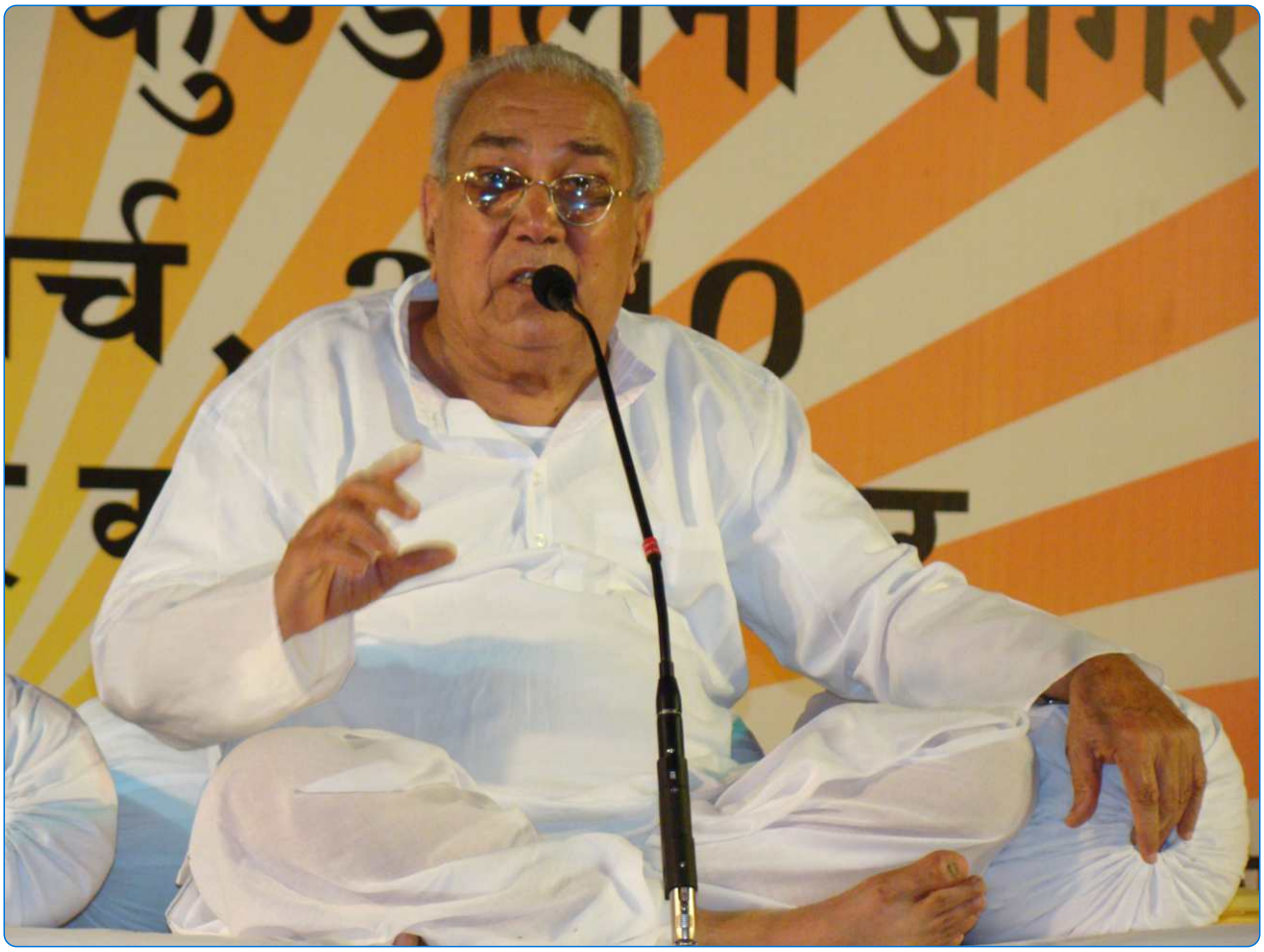

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

www.the-comforter.org

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

जीवन का उद्देश्य है भगवान को पाना। भगवान दूर नहीं हैं, वे हमारे अन्दर हैं, अन्दर गहराई में, भावना तथा विचारों से ऊपर। भगवान के साथ शांति और निश्चित है सभी कठिनाईयों का समाधान। अपनी समस्याएँ भगवान को सौंप दो। वे तुम्हें कठिनाईयों से बाहर निकाल लेंगे।

–श्री माँ (श्री अरविन्द आश्रम)

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——

Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001

फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।